

ओमशान्ति मीडिया



वर्ष - 27

जनवरी - 2026

अंक - 01

माउंट आबू

Rs.- 20

शांत और स्थिर मन से ही विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती - महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू

- राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारी बहनों को कलश देकर और दीप प्रज्वलित कर किया वार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ
- मेडिटेशन रूपा में ध्यान में मग्न नजर आई राष्ट्रपति
- गुल्जार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में राष्ट्रपति, राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने किया पौधारोपण
- सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रहा
- कार्यक्रम में शहर के 3000 से अधिक गणमान्य लोग मौजूद रहे



राजयोग मानव चेतना को जगृत करता है- राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विभिन्न आयामों से राष्ट्र निर्माण की गतिविधियां निभा रही है। विश्व की यह विशाल संस्था नारी शक्ति द्वारा संचालित है। राजयोग मेडिटेशन वह साधन है जो व्यक्ति को सदगुण की ओर अग्रसर करता है। राजयोग से सुख, शांति, पवित्रता जैसे गुण स्वतः आने लगते हैं। राजयोग एक अभ्यास नहीं बल्कि सम्पूर्ण सकारात्मक जीवनशैली है। मेडिटेशन हमें सृष्टि के चक्र का बोध कराता है। वर्तमान परिस्थितियां हमारे कर्मों का ही फल है। राजयोग अपने आप से मिलने की अनुभूति है। जो हमें स्वयं को सुनना और शांत होना सिखाता है। राजयोग मानव चेतना को जागृत करता है और समाज को संगठित करता है। आज यह सभी के लिए अनिवार्य है।

लखनऊ-सुल्तानपुर रोड(उ.प्र.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने ब्रह्माकुमारी बहनों को एकता और विश्वास का दिव्य कलश देकर और दीप प्रज्वलित कर वार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया। सुल्तानपुर रोड, गुल्जार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति ने विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान(योग) विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि हर मनुष्य चाहता है कि दूसरे पर

तो इस बात का अनुभव होता है कि शांति और आनंद किसी बाहरी वस्तु में नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज बोता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। यह कदम सुंदर विश्व बनाने का संवाहक बनेगा- राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारीज की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज विश्व विद्यालय के गाँव-गाँव में शिक्षा केंद्र खुले हुए हैं। वहाँ के भाई-बहन एकता और विश्वास अभियान के द्वारा समाज में सुख-शांति, आनंद, प्रेम और विश्वास का संवाहक बनकर जन-जन तक पहुंचाते हैं।

भारत ने विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया - राष्ट्रपति महादया ने कहा कि भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति ने सदैव विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। आज जब विश्व कई चुनौतियों का सामना कर रहा है तब यह विचार और अधिक प्रासंगिक बन गया है। मुझे विश्वास है कि इस महासंकट को दूर करने के लिए इस अभियान का प्रभावी योगदान रहेगा। मैं इस अभियान के शुभारंभ के लिए ब्रह्माकुमारीज परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ। हम स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें - राष्ट्रपति ने कहा कि आधुनिक समय में विज्ञान और

तकनीकी क्रांतिकारी परिवर्तनों ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, सुलभ और संसाधन समृद्ध बनाया है। लेकिन समाज में तकनीकी उन्नति के साथ-साथ तनाव से असुरक्षा, अविश्वास और एकाकीपन बढ़ा है। आज आवश्यक है कि हम केवल भौतिक सुविधा में आगे बढ़ने के लिए ही नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें। इसका कदम ब्रह्माकुमारीज उठा रही है। ये

आयोजित किए जाएंगे। जिनके माध्यम से लोगों को विश्व एकता और आपसी विश्वास का संदेश दिया जाएगा। संस्थान के न्याय विद प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. नथमल, ओडिशा ने भी अपने विचार रखे। कुशल संचालन राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी, प्रयागराज ने किया।

ये भी रहे मौजूद - ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष



'एकता और विश्वास' अभियान का शुभारंभ कलश देकर करते हुए महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू। साथ हैं माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल व माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। **लोगों को देंगे आपसी एकता और विश्वास का संदेश** - गुल्जार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राधा दीदी ने कहा कि भारत जहाँ मथुरा में श्रीकृष्ण की कर्म भूमि और अयोध्या श्रीराम की चरित्र भूमि है। इस अभियान का उद्देश्य है, हम सभी एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन हैं। अभियान के तहत प्रदेश भर में गाँव-गाँव, शहर-शहर में कार्यक्रम

दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय, माउंट आबू, ज्ञान सरोवर परिसर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी, अभियंता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, पीआरओ ब्र.कु. कोमल सहित लखनऊ शहर के 400 से अधिक बिजनेसमैन, 100 से अधिक डॉक्टर, 300 से अधिक प्रशासनिक अधिकारी और ब्रह्माकुमारीज से जुड़े तीन हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

संस्थान सकारात्मक माहौल का कर
रस निर्माण - योगी आदित्यनाथ



माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि व्यक्ति के बंधन और मोक्ष का कारण उसका मन है। आज दुनिया में जो भी आतंकवाद उपद्रव हैं इसके पीछे मन की चंचल प्रवृत्तियां ही हैं। मन का एक सकारात्मक पक्ष है जो सकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाता है, वहीं एक नकारात्मक मन नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाता है। ब्रह्माकुमारी से जुड़े सभी आंगतुक राजयोग के माध्यम से सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह केंद्र पूरे उत्तर प्रदेश के लिए, राजयोग प्रशिक्षण के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करेगा।

विश्वास करें लेकिन विश्वास वहीं टिकता है जहाँ मन शांत, विचार स्वस्थ और भावनाएं शुद्ध हों। जब हम कुछ क्षण रुककर स्वयं से संवाद करते हैं

झलकियां...

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुल्जार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर परिसर में पौधारोपण किया।
- राष्ट्रपति ने कुछ समय के लिए मेडिटेशन रूप में परमात्मा शिव बाबा का ध्यान किया।
- उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ स्नेह मुलाकात कर फोटो सेशन में भाग लिया।
- रायपुर से आये चित्रकार, कलाकार हितेंद्र भाई ने सेमीनार हॉल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और गुल्जार दादी की आकर्षक रंगोली बनाई जिसे देखकर लोग स्तब्ध रह गए।
- मथुरा से आए कलाकारों ने सुंदर श्रीकृष्ण, राधा और गोपियों के वेश में नृत्य की प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

यह संकल्प आपका भाग्य बदल देगा...

हम समझते हैं कि "मैं आत्मा मूल रूप से परफेक्ट हूँ- मेरे अंदर शांति, प्रेम, शक्ति और पवित्रता के गुण पहले से मौजूद हैं।" बाहरी दुनिया भले ही इम्परफेक्ट हो, पर मेरी भीतरी परफेक्शन ही मेरा असली भाग्य तय करती है। इस सत्य को उदाहरण के साथ समझते हैं...



राजयोगिनी दादी प्रकाशनी जी

1. पहला उदाहरण - बाहर धूल हो सकती है पर हीरा हमेशा चमकता है। हीरा चाहे कीचड़ में गिर जाए, उसका मूल्य नहीं घटता। ठीक उसी प्रकार, बाहरी परिस्थितियाँ कितनी भी चुनौतिपूर्ण क्यों न हों, आत्मा अपनी परफेक्शन नहीं बदलती। अगर मैं अपनी कीमत और शक्ति याद रखूँ, तो परिस्थितियाँ मुझे नहीं गिरा सकती।

2. दूसरा उदाहरण - मौसम बदलता है पर सूर्य की रोशनी नहीं। बाहर बादल हो सकते हैं, पर सूरज अपनी रोशनी नहीं खोता। इसी प्रकार, लोग कैसा व्यवहार कर रहे हैं, यह उनका मौसम है। मेरी शांति, मेरा एटीट्यूड - यह मेरी सूर्य रोशनी है।

3. तीसरा उदाहरण - रेडियो पर क्या चल रहा है, यह आपके हाथ में नहीं; पर आपकी फ्रीक्वेंसी आपके हाथ में है। दुनिया में नकारात्मकता, गलत बातें, तनाव - यह सब "बाहरी चैनल" हैं। लेकिन मेरा भाग्य इस बात पर नहीं बनता कि बाहर क्या बज रहा है बल्कि इस पर बनता है कि मैं किस फ्रीक्वेंसी पर ट्यून हूँ।

अगर मैं खुद को बार-बार याद दिलाऊँ, "मैं ठीक हूँ... मैं शुद्ध आत्मा हूँ... मैं शांत हूँ... मैं शक्तिशाली हूँ" तो मेरी फ्रीक्वेंसी दिव्य बनी रहती है और वही फ्रीक्वेंसी मेरे जीवन का श्रेष्ठ भाग्य रचती है।

4. चौथा उदाहरण - पौधे को पानी सही मिले तो वातावरण कितना भी कठोर हो, वह बढ़ता है। हमारी आत्मा भी एक पौधे की तरह है।

अगर मैं सही संकल्प, सही एटीट्यूड और सही स्पंदन (प्रक्रमण) से उसे सोचूँ, तो रिश्तों में, कार्य में, जीवन में - हर जगह वृद्धि होगी। बाहरी दुनिया कठोर हो सकती है, लेकिन मेरा भीतरी पोषण मजबूत है तो मेरा भाग्य स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ बनेगा।

मेरा भाग्य लोग नहीं लिखते, परिस्थितियाँ नहीं लिखती, समय नहीं लिखता। मेरा भाग्य मैं अपने संकल्पों से लिखता हूँ। "मैं आत्मा परफेक्ट हूँ, मेरा एटीट्यूड परफेक्ट है, इसलिए मेरा भाग्य भी परफेक्ट बनेगा।"

अमृतवेला हो मासूम बच्चे की तरह...

अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए सबसे उत्तम समय ब्रह्ममुहूर्त है। जिस समय हमारे अति प्यारे परमपिता परमात्मा स्वयं हमें सर्वशक्तियों से श्रृंगारित करते हैं। ऐसे संगम के श्रेष्ठ समय के मध्य अपने को सर्वशक्तियों से भरने से वंचित न करें। इस समय का लाभ लेने के लिए न सिर्फ सोने के पहले का आधा घंटा बहुत ही महत्वपूर्ण है बल्कि अमृतवेले परमात्मा से श्रेष्ठ मिलन मनाने की नींव है। हमें बहुत ही ध्यान रखना है कि ऐसे समय को आलस व अलबेलेपन के कारण यूँ ही गंवाना नहीं है। अगर इसे गंवैया तो ये ऐसा हुआ जैसे कि मुँह में से निवाला छीन लेना। अमृतवेले पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव बाबा अपने बच्चों पर सर्वस्व लुटाते हैं जिसमें वरदानों से भी भरपूर करते हैं। ये तभी संभव हो सकता है जब हमारी बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी। जैसे कि एक छोटे बच्चे की होती है।

ओमशान्ति कहते ही क्या याद आता है? (बापदादा) और जब बापदादा याद आता है तो मन में खुशी की लहरें ऑटोमेटिकली अनुभव होती हैं क्योंकि बाबा ने हमें खुशियों का खजाना दे दिया और बाबा अभी ऐसी खुशियाँ



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ज्ञान क्या है? तो सुबह से देखो मेरे चेहरे में सदा के लिए वो खुशी, वो सन्तुष्टता, प्रसन्नता रहती है? हमें कौन मिला है, अतीन्द्रिय सुख मिला है, तो हमारी शक्ति अवश्य बताएगी। हमारे अन्दर की खुशी जो है वो परमात्मा की देन है। बाबा है कौन?

चेहरे पर खुशी, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की झलक दिखाई दे

देता है जो आघातकल्प चलेंगी, यह गैरंटी है। इसलिए बाबा से मन का जिगरी प्यार हो। खुशी के लिए स्पेशल महिमा है, खुशी गई माना सब गया, तो हेल्थ भी अच्छी नहीं होगी, वेल्थ का मजा नहीं आएगा। खुश नहीं हैं तो दवा का असर नहीं होगा। तब तो कहा जाता है खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। ज्ञान मिलते ही खुशी हो जाती है क्योंकि कोर्स करने के बाद बाबा मेरा हो जाता है ना। अब भगवान मेरा हो गया तो बाकी क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। तो बाबा कहता है जो अन्दर खुशी होगी वो आपके चेहरे से दिखाई देनी चाहिए, चलन में फर्क पड़ेगा।

बाबा कहता है बच्चों का चेहरा गुलाब के फूल मुआफिक खिला हुआ होना चाहिए क्योंकि बाबा मिला, ज्ञान मिला तो जो हमें मिला और किसी के पास नहीं है। हमें ज्ञान मिला तो हम खुश हैं माना यह ज्ञान का रेसपॉन्ड है। वो नहीं है तो बाकी

उनकी विशेषतायें स्मृति में लाना तो मजा आए, खुशी हो जाए। तो हम अभी साधारण नहीं हैं, दुनिया वाले हमारे चलन और चेहरे से ही समझ रहे हैं कि हमें कौन मिला है और क्या मिला है? अभी हमारा चेहरा बोले, चलन बोले। तो यह खुद ही अपने आपको चेक करके चेंज करना है। अपने चेहरे को रोज बाबा के ज्ञान के आइने में देखना कि सचमुच हमारा चेहरा देख के किसी को लगता है कि इन्हीं को कुछ मिला है, इनको कोई प्राप्ति हुई है। फर्क तो दिखाई देना चाहिए ना, ऐसे नहीं मेरा चेहरा ही ऐसा है, तो चेहरे में रूहानी चमक हो।

हमारा बाबा लाइट है ना, तो बाबा को साथ रखने से कभी भी माया वार नहीं करेगी। माया तो सबके पास आती ही रहती है लेकिन हम बाबा के साथ हैं, तो माया हमारे सामने टिक नहीं सकती है, खुद ही माया सरेण्डर हो जाएगी। तो अकेले कभी नहीं रहना, बाबा मेरे साथ है।

आप सब पाण्डव पति के प्यारे पाण्डव हो जिन्होंने अपने आपको इस संगम पर एक बाबा, एक बाबा की सेवा में बलिहार किया है। इन संगम की महा घड़ियों में अथक सेवाधारी बन डबल कमाई कर रहे हो। बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त के अतिन्द्रिय सुख का मजा इन घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। क्योंकि आप सभी ने अपने दिलतख्त पर एक बाबा को बिठाया है। बाबा भी कहता- मेरा



राजयोगिनी दादी प्रकाशनी जी

दिलतख्त तुम बच्चों के लिए है। यह बन्धनमुक्त समर्पित जीवन भी बहुत बड़ी तकदीर है। आप देह और देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ बाबा की अलौकिक सेवा में अपना तन-मन-धन, जीवन

तपस्वी हो।

आप सब इस अलौकिक भट्टी में आये हो- भट्टी का अर्थ ही है- अन्तर्मुख हो जाना। आप सब यहाँ विशेष 3-4 बातों के लिए आये हो। 1. आप बेहद सेवायें करके आये हो, उन सेवाओं से भी परे बाबा आप सभी को अपनी गोदी में विश्राम देगा। सेवायें तो बहुत करते, अब यहाँ आये हो तो बाबा की शीतल छाया में, यादों में खो जाना।

बाबा की हर मुस्ली में जो योग का मंत्र आता, उसी योग की बहुत गहरी, स्वीट साइलेन्स की बहुत सूक्ष्म शक्ति की अनुभूति करना। उसी योग के चार्ट को सम्पन्न करना। खास योग की अपने में इतनी शक्ति भरकर जाना जो वह याद की शक्ति सेवा में रहते ऑटोमेटिकली अपनी ओर खींचती रहे। इसके लिए जो भी कोई सूक्ष्म चिंतन हो, परचिंतन हो, दिल के अन्दर सूक्ष्म में संस्कार हो, स्वभाव हो, वृत्तियों में कोई विकल्प हो, इसी घड़ी से उसको ऐसे भूल जाओ जैसे वह मेरे थे ही नहीं। आप समझो हम संसार की न्यूज़ से परे, सब संकल्प-विकल्पों से परे अन्तर्मुखता की गुफा में आये हैं। अन्तर्मुखी तपस्वीमूर्त बन जाना है। यही हमारी अन्त मति सो गति है। इसी की हम सबको दरकार है, यही हमारी तपस्या है, याद है जो हमें विकर्माजीत बनाएगी। इसके लिए एकदम आवाज से परे, मन्सा के संकल्पों से भी परे रहना। ऐसा समझो हम बाबा की याद के व्रत में हैं, मौन में हैं। न मुख

सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है

सफल कर रहे हो। यह श्वास भी बाबा की है तो संकल्प भी बाबा के हैं। बाबा के सिवाए इन आँखों में दूसरा कोई बसता ही नहीं।

ड्रामा अनुसार संगम पर बाबा ने शिवशक्तियों को ज्ञान का कलश दे सेवाकेन्द्रों पर निमित्त रखा है। लेकिन आप सबकी यह महान तकदीर है जो आपने अपने आपको विश्व कल्याण की सेवा में अर्पित किया। ड्रामा अनुसार आपको यह महान भाग्य मिला है। उन प्रवृत्ति वालों को लौकिक बंधनों को निभाते अलौकिक सम्बन्ध में आने का पार्ट है। हजारों में विरले ही कोई-कोई को यह लॉटरी मिलती है। आप सबको स्पेशल निर्मंत्रण दे बुलाया है। इसलिए आप लोगों के भाग्य का हम क्या गुण गावें! आप डबल सेवाधारी, त्यागी

का बोल, न मन का बोल, न आवाज सुनना, न आवाज में आना। जब ऐसे अन्तर्मुखी हो जाएंगे तो चमकते हुए सितारे दिखाई देंगे। चमकती हुई मूर्त बन जाएंगे।

याद की भट्टी का मजा लेने के लिए कागपलीट मौन में रहना है, याद के व्रत में रहना है, निद्राजीत बनना है। ज्ञान के मनन-चिंतन से, योग की शक्तियाँ भरपूर करनी हैं। हर कदम में शक्ति रूप बनना है। सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है। क्योंकि जीवन में हँसना, खेलना, बहलना तो होता ही रहता है परन्तु अभी जो बाबा लास्ट स्टेज बार-बार कहता, वह है ही याद के यात्रा की। इसलिए हमें यादों में समाना है और समाकर शक्ति भर जाना है।

ज्ञान को ध्यान से सुनकर कर्म और सम्बन्ध में यूज़ करो तो योग सहज हो जाएगा

सदा हर्षित रहने में देह का अभिमान विघ्न रूप बनता है। अपमान की फीलिंग आ जाती है। तो ऐसे देह अभिमान को निकालने के लिए बाबा ने ध्यान खिंचवाया कि सर्वशक्तियों को यूज़ करो उसमें भी खास परिवर्तन शक्ति। अपना अनुभव, विवेक कहता है कि अन्दर की लगन हो कि मुझे परिवर्तन होना है। कभी भी यह लगन ठण्डी न हो। ऐसे नहीं इसमें चेंज आनी चाहिए, यह परिवर्तन हो इस ख्याल के बजाए मुझे चेंज होना है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। जब विश्व परिवर्तन होगा तो क्या हमारे अन्दर परिवर्तन नहीं आएगा? यह अन्दर विश्वास हो, यह शब्द कोई घड़ी न भूले।

अपने आइने में देखते तो दिल गवाही देता है कि परिवर्तन से हम बाबा के सामने या सेवा में अनेक आत्माओं के सामने आ सकते हैं। नहीं तो मन खाता है कि मेरे में परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन होता जाता तो अपने में विश्वास बढ़ता जाता। परिवर्तन होता जाता तो फील करते कि हमारे में सहन शक्ति, समाने की शक्ति है। परिवर्तन न होने का कारण है - सहन



राजयोगिनी दादी ज्ञानकी जी

शक्ति की कमी। सिर्फ समा लो तो सहन करने की भी आवश्यकता नहीं है। समाने की शक्ति अनेक बातों में गम्भीर, सयाना बना देती है। मुख से यह नहीं निकलेगा कि हम सहन करते हैं या मेरे में सहनशीलता की कमी है। सहनशीलता की कमी क्यों है? समाने की शक्ति नहीं है। तो एक-एक शक्ति बाबा ने वर्से में दी है- एक-एक शक्ति कमाल का परिवर्तन कर सकती है। ज्ञान को इतना यूज़ करो जो सुनते-सुनाते हमारे जीवन में आ जाए। कथनी करनी समान हो जाए, बोल और कर्म में कोई अन्तर दिखाई न पड़े। कर्म व जीवन में आया हुआ है तो चेहरा बता देगा, बोल भले कम बोलें। अभ्यास करके देखेंगे तो दिन-प्रतिदिन हमारे बोल कम होते जाएंगे। बहुत बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लोगों को दुनिया में ऐसे हर्षित चेहरे दिखाई नहीं देते। उदास, मुँझे हुए चेहरे, रीयल दुःख से भरे हुए चेहरे हैं। हमारे रीयल सुख से भरे हुए चेहरे हैं। रीयल सुख, शान्ति, प्रेम और आनंद भरा हुआ है - कोई खोलकर देखो। यह सब ज्ञान की शक्ति के आधार से भरा है।

जब परिक्षाएं आती हैं तो कहते हैं कि अगर ज्ञान न होता तो पता नहीं मेरी क्या हालत होती। ज्ञान अन्दर से अशान्ति को खत्म करता है। ज्ञान, योग को भी सहज कर देता है। ज्ञान को अगर अच्छी तरह से समझकर जीवन में लायें तो योग कोई कठिन नहीं है। जैसे मैं संगमयुग पर बाबा के सामने बैठी हुई आत्मा ब्रह्माकुमार-कुमारी हूँ। बाबा कहते तुम सर्वोत्तम ब्राह्मण हो। सर्वोत्तम पार्ट कैसे होगा? अपने संकल्प, वचन व कर्म पर ध्यान देने से। जितना हम ज्ञान को ध्यान से सुनते हैं उतना ही कर्म में, सम्बन्ध में ज्ञान को यूज़ करते हैं। ज्ञान से हमारा सम्बन्ध बाबा से ऐसा हो जो लौकिक में यह ध्यान न रहे कि यह मेरी बेटी है, मेरी बहन है... अगर मेरा छूटा हुआ है तो उनसे भी मेरा टूट जाता है। कैसी भी परिस्थिति में पुराना कोई याद न आये। अभी सब नया है। ज्ञान ने हमको नया बना दिया, नवीनता आ गई। यह हमारा जन्म दिव्य है। पढ़ाई है ही देवता बनने के लिए। ज्ञान मंथन करने से समझ में आता है, बुद्धि में बैठता है। ज्ञान मेरे जीवन में कहीं तक आया है। जिससे मैं ज्ञानी तू आत्मा, बाप की प्रिय आत्मा बन जाऊँ। वह तब बन सकती जब संकल्प, वचन में ज्ञान हो, ज्ञान युक्त, युक्तियुक्त हो, फिर योग अच्छा रहेगा।

ज्ञान दाता से देने वाले बाप से योग होगा। अन्दर से शुक्रिया निकलेगा बाबा आपने कितना अच्छा समझाया है। हम दे रहे हैं, नहीं। दाता का दिया हुआ है। देह अभिमान का दरवाजा बन्द करना है, अभिमान आये ही नहीं उसके लिए करनकरावन बाबा तू है। करता वही है, अभिमान आने की आवश्यकता नहीं है। काम हमने कुछ किया ही नहीं है, अभिमान फालतू झूठा लेकर बैठे हैं। सच का अभिमान नहीं होता। सच स्वतः दिखाई पड़ता है। जब तक झूठ मिक्स है तो देह अभिमान होता। सच से प्रीत है तो देह अभिमान रह नहीं सकता। जितना आगे बढ़ते जाते, आत्मा शुद्ध होती जाती तो सच्चा सोना दिखाई देता। बाबा कहते- जो अलाएँ मिक्स हैं उसे निकालो। बाबा से गहरा सम्बन्ध रखो तो वह निकले।



देहरादून-सुभाष नगर(उत्तराखंड)। जेंडियन मिलेट्री एकेडमी में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत सरकार का अभिवादन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मोना दीदी एवं ब्र.कु. सुशीला।



लखनऊ-उ.प्र.। 'एकता और विश्वास' अभियान के शुभारम्भ अवसर पर गुल्जार उष्वन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में पौधारोपण करने के परचात् समूह चित्र में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रीति मुर्मू, माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, ब्र.कु. लीना, मंडीत आनू तथा अन्य।



मेहसाणा-गुज.। नवनिर्मित भवन के शिलान्यास कार्यक्रम में विधायक मुकेश पटेल, अर्बन बैंक के चेयरमैन डाह्या पटेल, आर्किटेक्ट वसंत मोदी, इंजीनियर जयेश पटेल, कॉन्टेक्टर हितेश सधवार, राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, पालनपुर, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम दीदी, पाटण, राजयोगिनी ब्र.कु. रक्षा दीदी, विसनगर, ब्र.कु. इन्डु, उंझा, ब्र.कु. प्रभा, माणसा, ब्र.कु. किरण तथा अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। सरदार कल्लभभाई पटेल जी की 150वीं जयंती पर यूनिटी मार्च में सम्मिलित सभी बच्चों एवं केन्द्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार का फूलों द्वारा स्वागत करते हुए स्थानीय सेवकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. रेखा, नवनिर्मुक्त प्रदेश मंत्री भाजपा श्रीमती अर्चना सिंह, वरिष्ठ पत्रकार हरि अग्रवाल, नगर परिषद अध्यक्ष भूपेन्द्र गुप्ता, बिजावर, नगर परिषद राजेश शर्मा, सर्टई, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह, समाजसेवी शंकर लाल सोनी, समाजसेवी पंकट पहारिया तथा अन्य।

भारत की सतयुग से कलियुग तक की दिव्य यात्रा...



भारत की आध्यात्मिक परम्परा केवल इतिहास नहीं, एक गहन चेतना यात्रा है, आत्मा की यात्रा। इस यात्रा में आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हुए चार युगों का अनुभव करती है। यही उत्थान से पतन तक की वह कहानी है जिसे सृष्टि चक्र कहा जाता है।

1. सतयुग - पूर्णता का स्वर्णिम युग

सृष्टि का आरम्भ सतयुग से होता है। यहाँ हम सभी आत्माएं सतोप्रधान पूर्णतः पवित्र, शांत और दिव्य गुणों से भरपूर थीं। इसलिए इस युग को स्वर्णिम युग कहा जाता है। इस समय एक धर्म, एक राज, एक भाषा और एक संस्कृति थी। किसी प्रकार का दुःख, भय, क्रोध, विवाद या असुख नहीं थी। आत्माएं अपने दिव्य स्वरूप में रहते हुए 8+12= 20 जन्म तक पूर्णता का अनुभव करती हैं। प्रकृति भी पवित्र और मनुष्य भी पवित्र - इसीलिए इसे देवताओं की दुनिया कहा गया है।

नहीं थी। आत्माएं अपने दिव्य स्वरूप में रहते हुए 8+12= 20 जन्म तक पूर्णता का अनुभव करती हैं। प्रकृति भी पवित्र और मनुष्य भी पवित्र - इसीलिए इसे देवताओं की दुनिया कहा गया है।

2. त्रेतायुग - दिव्यता का क्रमिक क्षरण

जब आत्मा की पवित्रता में थोड़ा-सा ह्रास आता है तो सतयुग से त्रेता युग प्रारम्भ होता है। यहाँ आत्माएं सेमी सतोप्रधान कहलाती हैं। दिव्यता तो रहती है पर पूर्णता का प्रतिशत थोड़ा कम हो जाता है। इस युग में भी हम 12 जन्म लेते हैं। त्रेता को चौदी युग माना गया है - जहाँ सुख, शांति और समृद्धि तो है पर स्वर्णिम पूर्णता का चमक थोड़ा मंद पड़ चुका होता है।

3. द्वापर युग - अध्यात्म से धर्म की ओर परिवर्तन

यही वह समय है जब आत्मा की शक्ति में गिरावट और देह अभिमान की शुरुआत होती है। अब 'आत्मा' की जगह 'धर्म' प्रमुख हो जाता है और नयी-नयी मत और मान्यताएं उदय होने लगती हैं। द्वापर के साथ ही भक्ति युग आरम्भ होता है। अब मनुष्य पवित्रता खोते हुए यह अनुभव करने लगता है कि जीवन में कोई परम शक्ति है जिसे पाने के लिए पूजा-पाठ आवश्यक है। द्वापर और कलियुग मिलाकर हम आत्माएं 63 जन्म लेती हैं।

4. कलियुग - तमोप्रधान अवस्था का चरम

कलियुग वह समय है जब आत्मा का तमोप्रधान स्वरूप चरम पर पहुंच जाता है - अशांति, भय, दुःख, संघर्ष, असुख, आपसी ईर्ष्या, क्रोध और विकारों का विस्तार बढ़ता जाता है। प्रकृति में भी असंतुलन आता है और मनुष्य की चेतना भी भारी और कमजोर हो जाती है। इसीलिए संसार के सभी धर्मग्रंथ बताते हैं कि कलियुग के अंत में परम परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

5. संगमयुग - परमात्मा का दिव्य अवतरण

कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ के बीच जो लगभग 100 वर्षों का छोटा-सा काल है, वही पुरुषोत्तम संगम युग है। यही युग वह पवित्र समय है जब परमात्मा स्वयं अवतरित होते हैं - पतित आत्माओं को पावन बनाने, उन्हें सतोप्रधान स्वरूप में वापस ले जाने और नयी सृष्टि - सतयुग की स्थापना करने।

इसी काल में राजयोग की शिक्षा के माध्यम से मनुष्य आत्मा को उसकी वास्तविक पहचान, शक्ति और दिव्यता से पुनः जोड़ दिया। भारत की यात्रा केवल चार युगों की कहानी नहीं बल्कि आत्मा के उत्थान-पतन और पुनः स्थापना का चक्र है। संगमयुग वह दिव्य समय है, जब परमात्मा मनुष्य को फिर से देवत्व का अधिकारी बनाते हैं ताकि सतयुग का स्वर्णिम राज्य पुनः स्थापित हो सके।



डोंविवली-मुंबई(महा.)। घाटकोपर सबजोन मुंबई द्वारा सेवाओं के 50 वर्ष पूरे होने पर गोल्डन जुबली के उपलक्ष्य में 'दुआओं का सफर, दिल से दिल तक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीकांत शिन्दे, लोक सभा सांसद और शिवसेना राजनीतिक दल के सदस्य की ओर से राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी को शुभेच्छा पत्र तथा अध्यात्म दीप्ति पुरस्कार देते हुए ठाणे जिले में कल्याण ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के विधायक राजेश मोरे जी।



शांतिवन-राज.। श्रीराम शिंदे महाराष्ट्र विधान सभा परिषद अध्यक्ष से मुलाकात कर ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. दिलीप राजकुले, शांतिवन। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा अन्य।



वडोदरा-मंगलवाडी(गुज.)। हीरक महोत्सव के अवसर पर 'बिलियन मिनिट वैश्विक शान्ति' प्रोजेक्ट का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. तारिका बेन, ब्र.कु. मंजू बेन, ब्र.कु. सुनीता बेन, ब्र.कु. धीरज बेन, गीता मन्दिर की गीता बेन शर्मा, डॉ. जयंत भाई, सुनील गणदेवीकर तथा अन्य।



नैनीताल-उत्तराखण्ड। नैनीताल राजभवन स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का स्वागत करते हुए आमंत्रित ब्र.कु. वोना, ब्र.कु. नौलम व अन्य भाई-बहनें। साथ हैं राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह व कैबिनेट मंत्री डॉ. धनसिंह रावत।



मुंबई-मुलुंड(महा.)। दीपावली व सेवाकेन्द्र के जन्मदिन के निमित्त आयोजित कार्यक्रम का केक काटिंग कर शुभारम्भ करते हुए मुलुंड उपक्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. गोदावरी दीदी, राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. लाजवंती दीदी, ब्र.कु. सरला ठाने तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें। मौके पर उपस्थित रहे नवभारत टाइम्स के पत्रकार सुशील पांडे, जेएमएफ स्कूल के प्रधानाचार्य राजकुमार तथा अन्य।



पुणे-बाणेर(महा.)। दीपावली के अवसर पर भारत के माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के 61वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी बाणेर द्वारा 610 किलो का लड्डू बनाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने पर डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी व ब्र.कु. जालिंदर को वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए विनर बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की चेयरमैन मिस रॉडिया डॉ. ईशा अग्रवाल एवं महाराष्ट्र सरकार में उच्च और तकनीकी शिक्षा, वस्त्र और संसदीय कार्य मंत्री चंद्रकांत दादा पाटील। कार्यक्रम के उपरान्त शिवबाबा की याद में बनाए गए लड्डू को प्रभु प्रसाद के रूप में अनायालय में बाँटा गया।



भुज-कच्छ(गुज.)। गुजरात अदानी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस कॉलेज में माइंड हार्ट हिलिंग विषय पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्त, कॉलेज के डीन डॉ. बालाजी फिलॉस्फी, डॉ. अजीत खिलनानी, डॉ. रेखा खिलनानी, राजयोगिनी ब्र.कु. रक्षा दीदी तथा अन्य।



जलगांव-महा.)। ब्रह्माकुमारी ब्रह्मिष्ठ प्रभाग के वरिष्ठ सदस्य तथा दैनिक देशोन्नति बुलबुलाना अन्वति के संपादक राजेश राजोरे, जलगांव को कविवरि बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय द्वारा कम्प्यूटेशन, मस मीडिया एवं जर्नलिज्म विषय में पीएचडी की उपाधि प्रदान करते हुए कबचौउमवि, वाइस चान्सेलर प्रो.वीएल माहेश्वरी। साथ हैं डॉ. सोमनाथ वडनेरे, प्रो. एसटी इंगले, प्रो. वाइस चान्सेलर, प्रो. सुधीर भटकर, मार्गदर्शक तथा डॉ. सुभाष तलेले सहशोध विद्वान।

वैसे देखा जाए तो दोनों ही बहुत उपयुक्त नाम दिए हुए हैं। शिव की जयंती अर्थात् परमात्मा शिव के दिव्य जन्म या दिव्य अवतरण और वो दिव्य अवतरण इस संसार की अज्ञान रात्रि के समय जब चारों ओर घोर अज्ञानता का अंधकार छाया हुआ होता है तो ऐसे समय पर ही परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण इस संसार में होता है। और उसी की याद में हम सभी बड़े धूमधाम से महाशिवरात्रि सारे भारत भर में मनाते हैं।

मैं समझती हूँ कि भारत का एक गाँव भी कोई ऐसा नहीं होगा जहाँ परमात्मा शिव का ये दिव्य जन्मोत्सव मनाया ना जाता हो। शास्त्रों के अनुसार अगर देखा जाए तो शास्त्रों में तीन कथाएँ हैं- प्रथम कथा, जिसमें दिखाया कि एक शिकारी शिकार करने निकला था परंतु सारा दिन उसे कोई शिकार प्राप्त नहीं हुआ। अंधकार होने को आया था तभी उसे एक हिरण दिखाई दिया। उस हिरण का पीछा करते हुए जैसे ही उसको मारने जा रहा था तो हिरण ने आकर शिकारी को कहा कि हे शिकारी! मैं अपने बच्चों से मिलकर आती हूँ, उसके बाद तुम मेरा शिकार कर लेना। शिकारी ने कहा कि मैं कैसे विश्वास करूँ तुम्हारा? कहा कि मैं सही कह रही हूँ मेरे बच्चे घर में अकेले होंगे, इंतज़ार कर रहे होंगे, मैं उनसे छुड़ी लेकर आती हूँ। अब रात्रि का समय था तो शिकारी क्या करता! सोचा जंगल है, जंगली जानवर होंगे तो

राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका



शिवरात्रि सर्व पर्वों में महान पर्व क्यों है? और सभी बड़े प्यार से इस त्योहार को मनाते हैं। इसके पीछे ये भाव है कि इस पावन पर्व पर शिव का रूप भोलानाथ की तरह होता है। हम छोड़-सा भी पुरुषार्थ करें तब भी वे भोला बनकर सर्वस्व बुझते हैं। इसी की यादगार में कई भक्त लोग रातभर जागरण करते हैं और कई तो निर्जला व्रत भी रखते हैं।

सर्व मनोकामना पूर्ण करने का त्योहार है शिवरात्रि

एक पेड़ पर चढ़ गया और वो पेड़ था बेल पत्र का। उसपर चढ़ गया तो सोचा जब तक हिरण आवे तब तक मैं इस पेड़ पर ही बैठ जाऊँ। लेकिन कहीं मेरी नींद न लग जाए और कहीं गिर गया तो कोई न कोई शिकार कर लेगा उसका। तो खुद जागृत रहने के लिए उसने बेल पत्र के पत्ते तोड़ना आरंभ किया और बेल पत्र नीचे गिराना आरंभ किया।

ठंडी के दिन थे, कांप रहा था ठंडी के मोरे, तो मुख से शिव-शिव निकल रहा था और पेड़ के नीचे एक शिवलिंग था। तो

उसपर बेल पत्र पड़ते गए। सुबह होने को ही आई। जैसे ही उसने देखा कि सामने हिरण आ रहा है और नीचे उतरा तो उसी समय शिवजी प्रगट हुए उसके सामने और कहा तुमने सारा दिन उपवास भी किया, सारी रात मेरी भक्ति भी की, बेल पत्र भी लाखों चढ़ाए मेरे ऊपर। और सारी रात जागरण भी किया। इसीलिए तुम मांगों जो मांगोगे वो मिल जाएगा।

कहा जाता है कि शिवजी इतने भोले हैं कि सारी रात उस शिकारी ने ऐसे किसी उद्देश्य से न जागरण किया था, न उपवास

है। लेकिन जैसे मैंने कहा कि शिवरात्रि ये सूचक है कि जब इस संसार में घोर अज्ञानता की रात्रि छा जाती है तब परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण होता है। और ऐसी रात्रि के समय जो अपनी आत्म ज्योति को जगा लेता है साथ ही साथ उपवास अर्थात् निरंतर मन के वास को उस प्रभु में एकाग्र करते हैं और भक्ति अर्थात् प्रेम से उस परमात्मा को याद करते हैं। ऐसी ही जब याद में मग्न स्थिति हो जाती है तो परमात्मा अपने भक्तों के उन संकल्पों को पूरा करते हैं, मनोकामना को पूर्ण करते हैं।



भिलाई-छ.ग.)। दीपावली के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी संस्थान के पीस ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् 'डिवाइन ग्रुप' के कलाकार बच्चों के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी।



हेन नागर-बैंगलुरु(कर्नाटक)। भाई दूज पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सम्पूर्ण बहन, जीएमआईआरएस मेडिकल कॉलेज, गुजरात के अतिरिक्त डीन और प्रोफेसर ब्र.कु. डॉ. अनिल बटीजा, ब्र.कु. यशपाल, मार्केट आर्बू तथा अन्य भाई-बहनें।



इंदौर-न्यू फ्लेमिंगिया(म.प्र.)। श्रीमती रजनी सिंह, ब्र.कु. आयुक्त, इंदौर को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. रजनी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. नारायण।



राजनंदगांव-छ.ग.)। ब्रह्माकुमारी जन शिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. प्रभा, जन शिक्षण संस्थान के निदेशक ज्ञानम सिंह, कार्यक्रम अधिकारी भागवत कुम्भकार, प्रशिक्षिका श्रीमती वीणा सक्करे तथा अन्य।

शिवरात्रि के पावन पर्व पर...

आत्म परिवर्तन के पाँच संकल्प



डॉ. शिवानी कानू, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

शिवरात्रि का पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि मानव आत्मा के गहव परिवर्तन का आध्यात्मिक समय है। शिवरात्रि का अर्थ है - शिव का आगमन और रात्रि, यानी अज्ञान, दुःख और बकायामकता का अंत। जब दुनिया मूल्यहीनता, भय, क्रोध, संघर्ष और अनुरक्त से भर जाती है, तब परमात्मा शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं और आत्माओं को पुनः शांति, पवित्रता और सत्य ज्ञान देकर जागृत करते हैं।

शिवरात्रि हमें याद दिलाती है कि आत्मा मूलतः शांत, पवित्र, प्रेममयी और दिव्य है, परंतु समय के प्रभाव से उस पर कमजोरियों की परतें चढ़ जाती हैं। परमात्मा शिव "ज्ञान की ज्योति" जलाकर हमें इन कमजोरियों से मुक्त करते हैं। शिवरात्रि का वास्तविक रहस्य यह है कि हम परमात्मा से योग द्वारा

शक्ति लेकर अपने संस्कारों का दिव्यकरण करें और स्वर्णिम भविष्य की रचना करें।

इसी आध्यात्मिक समझ पर आधारित पाँच दिव्य संकल्प जो जीवन परिवर्तन के लिए अति आवश्यक हैं:

1. मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं - आत्म जागृति का संकल्प

जब हम स्वयं को आत्मा मानकर कार्य करते हैं तो क्रोध, भय, ईर्ष्या जैसे व्यर्थ संकल्प स्वतः कम होने लगते हैं। यह संकल्प आंतरिक स्थिरता और आत्म-सम्मान को बढ़ाता है।

2. परमात्मा शिव मेरे सदैव साथी ईश्वर-सम्बन्ध का संकल्प

रोजाना कुछ समय मौन में बैठकर परमात्मा से योग जोड़ने का संकल्प हमें दिव्य शक्तियों से भर देता है। योग के माध्यम से आत्मा की थकान, पीड़ा व निगेटिविटी मिटने लगती है।

3. हर परिस्थिति में शांति और प्रेम से प्रतिक्रिया - संस्कार परिवर्तन का संकल्प

बाहरी स्थितियाँ जैसी भी हों, प्रतिक्रिया हमारे हाथ में है। यह संकल्प हमें भावनात्मक रूप से सशक्त बनाता है और सम्बन्धों में समरसता लाता है।

4. पवित्र संकल्प, पवित्र वाणी, पवित्र कर्म - कर्म शुद्धता का संकल्प

शिवरात्रि हमें यह याद दिलाती है कि पवित्रता ही दिव्यता का द्वार है। संकल्प लें कि कोई भी वचन या कर्म किसी को दुःख न पहुंचाए।

5. समाज और विश्व के लिए शांति वृक्ष बनना - दैवी गुणों का संकल्प

अपने घर, कार्यस्थल और समाज में शांति, प्रेम और करुणा का वातावरण फैलाना ही सच्ची शिवरात्रि की साधना है। जब हम बदलते हैं, संसार अपने आप बदलने लगता है।

शिवरात्रि का सच्चा अर्थ भक्ति नहीं, बल्कि परिवर्तन है। जब हर आत्मा इन पाँच संकल्पों को अपने जीवन में उतारती है, तब अज्ञान की रात समाप्त होकर दिव्य युग की प्रभात आरंभ हो जाती है।



जुनागढ़-मेहरडा (गुज.)। भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी से स्नेह मुलाकात कर उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ.कु. गीता, डॉ.कु. टीना। साथ हैं डॉ.कु. प्रकाश एवं डॉ.कु. दीपका।



वडोदरा-अलकापुरी (गुज.)। ब्रह्मकुमारीज गुजरात द्वारा सेवाओं के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मनाई जा रही होरक जयंती महोत्सव के अवसर पर शांति संदेश यात्रा का शांति रथ अलकापुरी सम्बन्धन सेवाकेन्द्र पहुंचने के पश्चात् गीता पाठशालाओं और संस्थानों में 11 दिन शांति संदेश देने की सेवा अर्थ हरी झण्डा व शिव ध्वजा दिखाकर स्वागत करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी डॉ.कु. निरंजना दीदी, राजयोगी डॉ.कु. नरेन्द्र, पुलिस कमिश्नर नरसिम्हा तामोर तथा अन्य। मौके पर उपस्थित रहे म्युनिसिपल कॉर्पोरेटर रीटा जी, सेंट्रल जेल की सुपरिंटेंडेंट कृषा राधा, महिला जेल की सीनियर जेलर गीता मेहता, पुलिस स्ट्राफ ऑफिसर एवं अन्य।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी (म.प्र.)। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों के प्रति मनाए जाने वाले विश्व यादगार दिवस पर ईश्वरीय संदेश देते हुए डॉ.कु. विमला दीदी। मंचासीन हैं जितेंद्र सिंह रघुवंशी, रोजनल ट्रांसपोर्ट ऑफिसर तथा अन्य।



नीमच-ज्ञान मार्ग (म.प्र.)। ब्रह्मकुमारीज सेवाकेन्द्र पर 'हर हाल में खुशहाल' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी डॉ.कु. सविता दीदी, राजयोगी डॉ.कु. सुरेन्द्र, डॉ.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, मेडिकल कॉलेज के डॉन आदित्य बोरड, कर्माडेंट प्रमोद साहू, ज्ञानोदय विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती माधुरी चौधरी, कर्माडेंट विजय कुमार, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती स्वाति चौपड़ा, डॉ. अशोक जैन, स्पेशल जज कुलदीप जैन, पूर्व विधायक नन्दकिशोर पटेल, वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष चौपड़ा तथा अन्य।



अलीराजपुर-म.प्र.। नव वर्ष व भाई दूज के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए जिलाधिकारी श्रीमती नीतू माथुर। मंचासीन हैं डॉ.कु. माधुरी, राजयोगी डॉ.कु. नारायण, ईदर, पुलिस अधीक्षक रघुवंश सिंह एवं समाजसेवी नमन जी।



रोवा-छिरिया (म.प्र.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'नए भारत के नव निर्माण में शिक्षक की भूमिका' कार्यक्रम में राजयोगिनी डॉ.कु. निर्मला दीदी, डॉ.कु. प्रमोद, युव हॉस्टल की चेयरमैन व प्रिंसिपल डॉ. सुनीता पांडे टोंकर, डॉ. निखा पटेल, वेटरनरी डॉक्टर, सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी जगन्नाथ साहू, दिव्य नगरी के मैनेजर आर.बी. पटेल, पूर्व शिक्षक रूपकुमार पुरवार तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही।



नवसारी-गुज.। गुजरात की होरक जयंती पर्व के अंतर्गत ब्रह्मकुमारीज द्वारा 'बिलियन मिन्दस ऑफ पीस' विश्वशान्ति प्रोजेक्ट का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी डॉ.कु. गीता दीदी, डॉ.कु. अल्पना, डायमंड मंचैट, जीवदया प्रेमी एवं समाजसेवी महबल जैन, सिद्ध कैप गुरुद्वारा प्रबंधक सरदार साजन सिंह, युवक मंडल प्रमुख मिहिर शुक्ल तथा अन्य।



राजगढ़-ब्यावरा (म.प्र.)। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ.कु. मधु, पी.एम. श्री कॉलेज के प्रिंसिपल विमल खरे, शासकीय डाइट कॉलेज की प्रशिक्षिका शोला फाटोदिया, पीजी कॉलेज की सेवानिवृत्त प्रोफेसर मनोहरलाल गुप्ता, शिक्षक कमलेश, कुसुम व सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं प्रकाश शर्मा।



खरोरा-छ.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर अडाणी पॉवर लिमिटेड में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सभी कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ.कु. उमा, डॉ.कु. सावित्री, डॉ.कु. सुनीता, प्रबंधक सुधाकर टंडन व एच.आर. भूपेन्द्र सिंह।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी (म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर 'एक पेड़ माँ के नाम' थीम पर आयोजित कार्यक्रम में वृक्षारोपण के पश्चात् पर्यावरण रक्षा की प्रतिज्ञा लेते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ.कु. सविता, डॉ.कु. गीता, डॉ.कु. साशी, डॉ.कु. रोशनी, पं. शिवशक्तिराम शर्मा, आयुर्वेदिक कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दिलीप नलगे, समाजसेवी राजेन्द्र पौरवाल तथा अन्य भाई-बहनें।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - डॉ.कु. मंगेश्वर, ब्रह्मकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स नं-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414172087

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹. 240, तीन वर्ष - ₹. 600, अजीवन - ₹. 6000

Website: www.omshantimedia.org

भारत में हर कोई आंवला से परिचित है एवं यह सबसे प्राचीन आयुर्वेदिक औषधियों में से एक माना जाता है। भारत में ख़ास ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसने अपने जीवन में कभी आंवले का नम न सुन हो। घरेलू वृक्षों में आंवले का इस्तेमाल बहुत ज़्यादा किया जाता है और आपने भी कभी न कभी आंवले के औषधीय गुणों का लाभ जरूर उठाया होगा। आंवले में जीवाणु रोधी और पोषक तत्व मौजूद होते हैं जिन्हें वज़रअंदाज़ कर पाना मुश्किल है। आयुर्वेद के वो सबसे प्रमुख ग्रंथों चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में आंवला को ऊर्जादायक जड़ी-बूटी के रूप में वर्णित किया गया है। इसके इतने लाभ हैं कि हर गुण का वर्णन इतने से सब्बों में करना आसान नहीं इसलिए कुछ गुणों का वर्णन हम आपके सामने कर रहे हैं...

आंवला निरापद प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए

प्रतिरक्षा प्रणाली हानिकारक संक्रमण के खिलाफ लड़ता है और शरीर को रोग मुक्त रखने में मुख्य भूमिका निभाता है। विटामिन सी से भरपूर होने की वजह से आंवला स्वाभाविक रूप से प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और रोगों के खिलाफ लड़ने के लिए पर्याप्त क्षमता प्रदान करता है। आप आधे कम गर्म पानी में बराबर मात्रा में आंवला रस मिलाएं और इसका रोज़ सेवन करें।

आंवला स्वस्थ एवं मजबूत हड्डियों के लिए

आंवला हड्डियों को मजबूत बनाने में भी निपुण है। इसमें कैल्शियम अच्छी मात्रा में पाया जाता है और यह वातनिरोधक औषधि गुणों से भी परिपूर्ण है। आंवला रस रोज़ पीने से हड्डियां मजबूत हो जाती हैं और जोड़ों के दर्द से भी मुक्ति प्राप्त होती है।

आंवला पोषित नसों के लिए

नसों संदेशों को मस्तिष्क तक प्रसारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आंवला इन नसों को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आंवला में पोटेसियम प्रचुर मात्रा में होता है जिसके कारण यह तंत्रिका तंत्र को मजबूत कर परिसंचरण में सुधार करता है। इसमें जैव-फ्लेवोनोइड्स भी होते हैं जो कोशिकाओं की पारगम्यता को बनाए रखने में मदद करते हैं। ताकि पोषक तत्व रक्त वाहिकाओं के माध्यम से पूरे शरीर में आसानी से पहुंच सके। इस प्रकार आंवला तंत्रिका तंत्र और नसों को स्वस्थ रखने में लाभदायक है।

आंवला चूर्ण क्रियाशील मलत्याग के लिए

आंवला स्वस्थ उत्सर्जन को भी नियंत्रित करता है। आंवला एक अच्छा एंटी

ऑक्सीडेंट है और विटामिन सी से भरपूर है। यह मूत्राशय और गुर्दे को हानिकारक पदार्थों से बचाता है और मूत्र प्रणाली को स्वस्थ रखता है। अपने दिन की शुरुआत शहद युक्त आंवला रस पीने से करें और अपनी मूत्र प्रणाली को स्वस्थ बनाएं।

आंवला विकाशन पाचन शक्ति के लिए

स्वस्थ शरीर में सुदृढ़ पाचन शक्ति की एक अहम भूमिका है। आंवला में फाइबर और पानी उच्च मात्रा में पाया जाता है। साथ ही इसमें एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। फाइबर गैस्ट्रिक और पाचन रस के स्राव के लिए आवश्यक होता है और पाचन क्रिया को बढ़ाने में मदद करता है। जिसकी वजह

से आंवला पूरी पाचन प्रक्रिया को स्वस्थ रखने के लिए बहुत लाभकारी होता है।

गले के लिए फायदेमंद

आंवला गले को भी स्वस्थ रखने में सहायता करता है। अदरक जूस के साथ इसका सेवन करने से गल शोध एवं थाइराइड जैसे विकारों से मुक्ति मिलती है।

आंवला स्वच्छ श्वसन प्रणाली के लिए

श्वसन प्रणाली साँस लेने एवं छोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन सर्दी, खाँसी, दमा, ब्रोंकाइटिस एवं यक्ष्मा

जैसे श्वसन संबंधी रोग साँस लेने में गंभीर कठिनाई पैदा कर देते हैं। आंवला इन कठिनाइयों को दूर करने में निपुण है। परंतु आंवला शीतल स्वभाव का होता है, इसलिए इसका सेवन शहद या फिर काली मिर्च के साथ ही करना चाहिए।

आंवला का उपयोग मजबूत दंतों के लिए

आंवला एक शक्तिशाली एंटीमाइक्रोबायल एजेंट है। इसलिए यह विभिन्न प्रकार के रोगजनों और बैक्टीरिया से होने वाली परेशानी को कम कर सकता है। एक अध्ययन में पाया गया कि आंवला स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन नामक बैक्टीरिया

के विकास को रोकने में सक्षम है। स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन दाँतों में कीड़ा लगने का कारण होता है। अतः इसके विकास को रोककर आंवला दन्त क्षय जैसी दाँतों की समस्याओं के इलाज में फायदेमंद है।

आंवला के गुण उन्नत नज़र के लिए

आँखें इंसान के लिए ईश्वर की एक अनमोल देन है। जीवन के हर पल को

है। आंवले का जूस और शहद मिला कर पीना आँखों के लिए लाभदायक होता है।

आंवला दिमाग को तेज़ बनाने के लिए

आंवला विटामिन और खनिजों का समृद्ध स्रोत है जो मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। रक्त में आयरन की अधिक मात्रा मस्तिष्क को ऑक्सीजन प्रदान करती है और साथ ही स्मृति में सुधार करती है। आंवला में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट मस्तिष्क को स्वस्थ बनाए रखने के लिए लाभकारी होते हैं। अपने दिमाग को पोषण देने के लिए इसका कच्चा फल खाएं।

मासिक धर्म में फायदेमंद

आंवला में खनिज और विटामिन मासिक धर्म के दौरान ऐंठन के उपचार में बहुत उपयोगी होते हैं। इसका नियमित रूप से सेवन आपको कई स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से बचा सकता है।

आंवला के नुकसान...

आंवला सत्वर्गिक एक प्राकृतिक औषधीय फल है, परंतु इसके भी कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं अगर इसका सेवन ज़्यादा किया जाए तो...

• आंवले की शीतल प्रकृति की वजह से यह सर्दी और खाँसी ट्रिगर पर बुरा असर डाल सकता है। इसके इस दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए इसका सेवन काली मिर्च या शहद के साथ करें।

• यदि आप इसका सेवन पानी के साथ न करें तो इससे आपको कब्ज हो सकता है।

• आंवला मधुमेह की दवा के साथ हस्तक्षेप कर सकता है।

• इसका अत्यधिक सेवन के लिए हानिकारक समझा हो सकता है। इसलिए दृढ़ संकल्प को इसका सेवन विविक्तिक की सलाह से ही करना चाहिए।

• यदि इसका सेवन लंबे समय तक किया जाए या फिर ज़्यादा मात्रा में किया जाए तो यह पचने को भी ज़रूर दे सकता है।

आंवला खाने का सबसे अच्छा तरीका इसे खाली पेट सुबह कच्चे रूप में खाना है। प्राकृतिक परिणामों के लिए आंवले के सेवन के बाद लगभग 45 मिनट तक चाय, कॉफी या दूध न पिएं। आंवला प्रकृति में खट्टा होता है और दूध उखाड़ने का सेवन हानिकारक हो सकता है।

सर्दियों में आंवले के गुणों को जान उठाएं भरपूर फायदा



ग्वालियर-म.प्र.। चिकित्सा दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के संगम भवन पर आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम में सभी डॉक्टरों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रहलाद, डॉ. स्नेहलता दुबे, डॉ. श्वेता माहेश्वरी, डॉ. शैलेन्द्र सिंह भदौरिया, डॉ. आशीष दुबे, डॉ. रुस्तम सिंह कौरव, डॉ. मुकेश शर्मा तथा अन्य।



राजनांदगांव-छ.ग.। इंडो तिब्बत बॉर्डर पुलिस (आईटीबीपी) के कैप में 'राजयोग द्वारा आंतरिक शक्तियों का विकास' विषय पर आयोजित कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. रम्भा, ब्र.कु. झालम भाई, विजय कुमार, सहायक सेनानी तथा अन्य आईटीबीपी के जवान भाई।



विलासपुर-छ.ग.। नई दुनिया मीडिया ग्रुप के सभी सदस्यों को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. गायत्री एवं ब्र.कु. प्रीति।



रीवा-झारखंड(म.प्र.)। रीवा सैनिक स्कूल के शिक्षक सुधीर अस्थाना के सम्मान में सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में उनको सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. प्रकाश एवं सुधीर अस्थाना की धर्मपत्नी सुजाता अस्थाना। यह सम्मान उनको उनके दो छात्रों उपेंद्र द्विवेदी को धल सेनाध्यक्ष व दिनेश त्रिपाठी को नौसेना प्रमुख बनने पर दिया गया।



नरसिंहपुर-म.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. उर्मिला, योगाचार्य यूनस खान तथा आस्था योग संस्था के सदस्यगण।



पन्ना-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित रक्तदान अभियान का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेश तिवारी, एडिशनल एसपी वंदना चौहान, डीएफओ अनुपम शर्मा एवं श्रीमती निशा जैन।

शिव अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक



ओमशान्ति मीडिया



नवयुग क्रांति का पावन संदेश-शिवरात्रि

जिस प्रकार मानव शरीर परमाणुओं से निर्मित है, गतिशील है और परिवर्तनशील है, लेकिन कहा जाता है कि योग उससे लगाएं जो अपरिवर्तनीय है, स्थिर है। इसीलिए मनुष्य आत्माओं से योग लगाने से शक्तिशाली नहीं बन सकते। लेकिन जो अपरिवर्तनीय है, निरंतर है, वो हम सबको अपने साथ जोड़कर स्थिर बना देता, अपने जैसा प्रकाशित कर देता। उस प्रकाशमान निराकार शिव को ही याद करने से हम सभी अमूल-चूल परिवर्तित होंगे। लेकिन परमात्मा शिव और शिवरात्रि के आधार से अदभुत दृश्य हम सबके सामने बनेगा। तो आधार ही हम सबको निराधार बना देगा।



जैसे का आदि और अंत नहीं होता। लेकिन यह अमूल्य है, सम्पूर्ण है। जैसे का अर्थ निरहंकारी भी है। इसमें न कुछ पसंद है और न कुछ मइजस, "बस है"। जो निरहंकारी है वही तो हम सबको निरहंकारी बनाएगा! इसी को भक्ति में निरहंकार और निरहंकारी शिव के रूप में भी कहते हैं। वही निरहंकारी शिव ब्रह्मा के मस्तक से प्रकट हो शिव शक्ति पैदा कर क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हैं।

शिवरात्रि कहा गया - रात्रि अर्थात् अंधकार का समय और शिव का आगमन उस अंधकार को मिटाने के लिए।

आत्मा में सुषुप्त - शक्ति को जागृत करना

परमात्मा का प्रथम कर्तव्य है - आत्मा की सुषुप्त शक्तियों को जगाना। मनुष्य स्वयं को देह समझने की भूल में इतना फँस गया है कि

उसके मूल गुण- ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता, शक्ति सब पीछे छूट गए। परमात्मा शिव आकर आत्मा को उसकी असली पहचान "मैं शुद्ध, अमर, दिव्य आत्मा हूँ" का स्मरण कराते हैं। इसी जागृति से आत्म शक्ति पुनः सक्रिय होती है और जीवन परिवर्तन की क्रांति शुरू होती है।

शिव माताओं-कन्याओं को देवी स्वरूप प्रदान करते हैं

सुख, शांति और समृद्धि का पर्व शिवरात्रि

शिवरात्रि वह पावन पर्व है जो आत्मा को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची समृद्धि बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि भीतर की शुद्धता, सकारात्मक विचारों, पवित्र भावनाओं और आत्म सशक्तिकरण में है। परमपिता शिव की याद में किया गया है राजयोग, मन को गहराई से शांत कर देता है। यह शांति बाहरी वातावरण पर निर्भर नहीं होती, बल्कि आत्मा की स्थिर अवस्था से उत्पन्न होती है। शिवरात्रि पर्व से हमें सीख मिलती है कि वास्तविक प्रकाश भीतर है और वास्तविक परिवर्तन भी भीतरी है। जब आत्मा दिव्य शक्ति से जुड़ती है तो जीवन में शांति, समृद्धि और सद्भाव स्वतः प्रकट होते हैं।

शिवरात्रि परमात्म अवतरण की यादगार



परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियाँ आती हैं, हमारा आत्मबल बढ़ता है क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्य

आत्माओं के परमपिता हैं। सत्-चित्त-आनंद स्वरूप हैं लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। परमात्मा शिव जब धरा पर आते हैं, जिसकी यादगार हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये, ब्रह्माकुमारी बहनें इसका आध्यात्मिक रहस्य सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्दी ही इस धरा पर स्वर्णिम युग आयेगा। परमपिता परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं उसके सानिध्य में आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव का ध्यान लगाती हूँ। आप भी इस महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझ अपने जीवन में सुख, शांति लायें, ये मेरी शुभकामना है।

- गलामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, भारत।

समय है ज्ञान और योग के इनोवेशन का

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान-योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज परिवार का अभिन्नंदन करता हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। शिवरात्रि के महापर्व पर मैं सभी को कोटि-कोटि बधाई देता हूँ।



- माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत।

शिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि परमात्मा शिव के अवतरण का पावन स्मृति दिवस है। यह याद दिलाता है कि जब संसार अज्ञान अंधकार और विकारों में पूरी तरह डूब जाता है, जब मनुष्य डायरेक्शन खो देता है- तभी परमात्मा निराकार शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं। उनका आगमन किसी भौतिक शरीर से जन्म लेने जैसा नहीं बल्कि ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए किसी साधारण मनुष्य तन में अवतरित होते हैं। यही कारण है कि इस दिन को

मानव की अज्ञानता और विकारों का अंधकार

आज का मनुष्य क्रोध, लोभ, अहंकार, भय और असुरक्षा में घिरा हुआ है। वह नहीं जानता कि क्यों दुःखी है, क्यों भटक रहा है, उसके कर्म उसे कहाँ ले जा रहे हैं, और जीवन का सही मार्ग क्या है। यह अज्ञान ही रात्रि है। जिसके कारण मनुष्य ठोकरें खा रहा है। जीवन ही बेझिल सा हो गया है। ऐसे में परमात्मा शिव का अवतरण इस अंधकार को ज्ञान-प्रकाश से समाप्त करने के लिए होता है।

हमेशा ये शब्द पूरे संसार में लोग अपने परमात्मा को उसके भावों को बताने के लिए एक शब्द का इस्तेमाल करते हैं कि वो ही सत्य है, वो ही शिव है, वो ही सुन्दर है। लेकिन आज हम इसके भावार्थ को समझते हैं...

सत्यम् का भाव- जो सत्य है वो शांत है। और सत्य चाहे वो व्यक्ति है, वस्तु है, चाहे संसार है, चाहे समाज है और चाहे परमात्मा है, अगर वो सत्य है तो शांत होगा और शाश्वत भी होगा। लेकिन कहा जाता है कि जो इन आँखों से दिखाई देता है चाहे व्यक्ति है, चाहे समाज है वो नश्वर है। ये नश्वरता सत्य है, ये भी हमको जानना आवश्यक है। सत्य का अर्थ हुआ कि "है और हमेशा है" उसके जानने के बाद क्या-क्या सत्य है, हमारा मन शांत हो जाता है। जब हम असत्य हैं, परेशान हैं, अशांत हैं, तो इसका अर्थ है हम सत्य नहीं, हम शांत नहीं। इसलिए सत्य की पहचान है प्रेम, शांति, और आनंद।

शिवम् का भाव- कहा जाता है जो हमारे साथ होता है वो कल्याणकारी ही है। लेकिन ये बात हमारे अन्दर बैठे कैसे?

इसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है। इसलिए शिव का शाब्दिक अर्थ और भावार्थ कल्याणकारी के साथ जोड़ा जाता है। परमात्मा हमें सिखाते और कहते भी कि जो हमारे कर्म, जो हमारी सोच रही है उसी का परिणाम हमारे साथ चलता है। लेकिन वो कल्याणकारी ही है, उसमें कुछ राज है, कुछ रहस्य है वे जानने के बाद मन अशांत नहीं होगा। आराम से परिस्थितियों से बाहर निकल आता है। यही कल्याणकारी भाव हमेशा रहे, सदा रहे इसलिए सदा शिव भी कहते हैं परमात्मा को। जैसे वो सदा कल्याणकारी है ऐसे हम भी सदा कल्याणकारी रहें। कल्याणकारी सोच के साथ जीयें और भावों पर अमल करें।

संसार विविधताओं का बहुरंगी रूप है। इसमें धर्म, भाषा, संस्कृति को देखना और उसका चिंतन करना एक सुन्दरता को इंगित करता है। जीवन एक सीधी रेखा नहीं है। उसमें विविधता है, उसमें एक रिदम है इसीलिए संसार सुन्दर है।



सम्पन्न दिखेंगे। एक अलौकिक आभा हमारे ऊपर भी दिखाई देगी। क्योंकि हम सभी आत्माएं परमपिता परमात्मा की संतान हैं जैसे परमात्मा सत्य है, सुन्दर है, कल्याणकारी है वैसे हम भी होंगे। इस आध्यात्मिक जीवन यात्रा में इसको अपनाने मात्र से समाज में अमूल-चूल परिवर्तन आयेगा और लोगों के अन्दर भाव बदलेंगे।

अतः जीवन का सच्चा उद्देश्य है सत्य को जानना, शिव को पहचानना और सुन्दरता को अपनाना। यही आध्यात्मिक यात्रा है जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है। जब हर आत्मा इस सत्य को स्वीकारेगी, तब ही पृथ्वी पर स्वर्णिम युग अर्थात् नई सृष्टि की स्थापना होगी। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्- यही परमात्मा की सच्ची पहचान है और यही जीवन का परम उद्देश्य।

अन्दर किसी के प्रति कोई भी दुर्भावना नहीं होती। उनको वैसे भी लोग परमात्मा का रूप कहते

हैं, ईश्वर का रूप कहते हैं। इसका अर्थ क्या हुआ कि अगर हम निरन्तर सत्यता के साथ जीयें,

कल्याणकारी भाव रखें, सबके बारे में शुभ सोचें, बोलें, भेदभाव से मुक्त रहें तो हम भी दिव्यता से

शास्त्र और पुराण भी कहते परमात्मा अवतरण की बात

श्रीमद्भगवद् गीता से लेकर महाभारत शिवपुराण, रामायण, यजुर्वेद, मनोस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रन्थ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण, परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य करते हैं। यहाँ तक कि शिव पुराण में स्पष्ट लिखा है कि ब्रह्मा के ललाट में प्रकट होऊंगा।

भारतीय आध्यात्मिक साहित्य पुराण, उपनिषद् और गीता अनेक स्थानों पर यह संकेत देता है कि परमात्मा निराकार, अजन्मा और अविनाशी है। वे सृष्टि के चक्र में किसी मानव शरीर का जन्म नहीं लेते, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर परकाया प्रवेश अर्थात् किसी मनुष्य देह को माध्यम बनाकर अवतरित होते हैं। उनका आगमन देहधारी जन्म नहीं, बल्कि प्रकाश का अवतरण है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध वचन -

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत..." इस सत्य को गहराई से दर्शाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर बार-बार जन्म लेते हैं, बल्कि यह कि जब धर्म की हानि होती है तब ईश्वर प्रकाश मानव माध्यम में उतरकर धर्म की स्थापना करते हैं। गीता की भाषा में इसे अवतार कहा गया है, परंतु उसका मूल स्वरूप ज्ञान प्रकाश ही है।

परमात्मा ने श्रीमद्भगवद् गीता के 9वें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति मां मूढा मानुषी, तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतममहेश्वरम्॥ अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढमति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूँ, तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते। मूढमति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते।

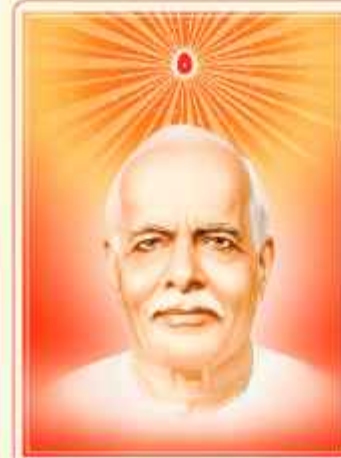
इस प्रकार शास्त्र और पुराण संकेत देते हैं कि परमात्मा का अवतरण निराकार ज्योति स्वरूप, परम प्रकाश और ज्ञान के अविर्भाव के रूप में होता है। उनका कार्य है - परिवर्तन, पवित्रीकरण और नई दिव्य दुनिया की स्थापना।

मैं साकार लोक में सत् धर्म की स्थापना करने आता हूँ... यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स तू मन को मुझमें लगा...

मूढमति लोग मुझे नहीं जानते...



► रामायण में लिखा है कि बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥ आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी (शिव के लिए)॥ वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना



► शिव पुराण में कोटि रूढ़ संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्मा जी के ललाट में प्रकट हुए। और उनका नाम रूद्र हुआ। यहाँ ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा ज्ञान का सागर है तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरूप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। जब परमात्मा ब्रह्मा जी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं। उस ज्ञान को धारण करने वालों में दिव्य परिवर्तन आता है और दैवी साम्राज्य की स्थापना होती है।

परमपिता परमात्मा निराकार, ज्योति बिंदु स्वरूप और सर्वश्रेष्ठ चेतन सत्ता हैं। वे जन्म-मरण के बंधन में नहीं आते और किसी भी भौतिक शरीर में निवास नहीं करते। उनके वास्तविक निवास स्थान को परमधाम, शांतिधाम या निर्वाणधाम कहा गया है। यह स्थान प्रकाश और शांति की पराकाष्ठा है। जहाँ समय, गति और परिवर्तन का प्रभाव नहीं। सभी आत्माएं भी मूल रूप से वहीं निवास करती हैं और सृष्टि चक्र के अंत में वहीं वापसी करती हैं। यही परमात्मा का अनादि, अविनाशी घर है।

कहाँ है परमपिता परमात्मा का निवास स्थान

सृष्टि को समझने के लिए तीन लोकों का वर्णन आता है - परम लोक, सूक्ष्म लोक और साकार लोक।

परम लोक (परमधाम)- यह परमात्मा और आत्माओं का मूल वास, स्थान है। यहाँ केवल लाल सुवर्ण प्रकाश, पूर्ण शांति और निश्चलता है। न कोई शब्द, न शरीर, न गति - केवल ऊर्जा का शांत अस्तित्व। परमात्मा यहीं से कल्प-कल्प में सृष्टि चक्र को दिशा देते हैं।

सूक्ष्म लोक (सूक्ष्मधाम)- यह मध्य लोक है, जहाँ देह नहीं होती, परंतु विचार रूप शरीर होता है। इसे देवी-देवताओं का सब्टल प्लेन (सूक्ष्म तल) कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की स्थितियाँ भी इसी लोक में मानी जाती हैं। यहाँ दृश्य रूप होते हैं, परंतु भौतिकता नहीं होती।

साकार लोक (भौतिक जगत)- यह पृथ्वी वह आधारित जगत है जिसमें मनुष्य शरीर धारण करके कर्म करते हैं। यही कर्मभूमि है और इसी पर जन्म-मरण का चक्र चलता है। परमात्मा निराकार होते हुए भी सृष्टि



चक्र के संधिकाल में मनुष्यों को ज्ञान देने आते हैं, परंतु उनका मूल निवास परम लोक ही है - शांति, प्रकाश और शक्ति का स्रोत।

हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुँह के सारे रसों का आनन्द लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

► मनोस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

► महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से अच्छादित थी तब एक अंडाकार ज्योति प्रकट हुई। और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

हम भी अपने परमपिता परमात्मा से मिल सकते हैं

एक मान्यता चली आ रही है कि कुछ ऐसे लोग ही परमात्मा से मिल सकते हैं या उनके नज़दीक जा सकते हैं जिन्होंने धर्म, अध्यात्म के आधार से कुछ जीवन जीया है या सन्यास धर्म को धारण करके उसकी खोज में गए हैं, या बहुत गहन तपस्या की है जिसके आधार से परमात्मा उनसे प्रसन्न होकर उनको दर्शन देगे। वही कुछ गहरी मान्यताओं ने मानव को डरा दिया। और कहा कि कहाँ! हम मिल सकते हैं उनसे। लेकिन आज ये बिल्कुल भी अमान्य भी है और बिल्कुल सम्भव भी है कि परमात्मा हमारा है और हमसे मिलता भी है। क्योंकि हम कहते हैं परमात्मा हमारा पिता है तो अपने बच्चों से मिलना लाज़मी है।

परमात्मा को दुनिया में गरीब निवाज़ कहते हैं और गरीब निवाज़ का अर्थ है- वो जो भावना वाले हैं, जिनका दिल शुद्ध है, पवित्र है उनको परमात्मा नवाज़ता है। उनको एक जागीर तक देता है। परमात्मा से मिलने का आधार शुभ और सात्विक कर्म हैं न कि शास्त्रित अध्ययन और न ही सन्यास। परमात्मा विकारों से सन्यास कराते और देह से न्यारा होने का अभ्यास कराते। ये दो ही ऐसे मुख्य कार्य हैं जो हमको परमात्मा के नज़दीक ले जाते हैं। कुछ लोगों ने उसको उल्टी गंगा के रूप में बहाया कि आपको विकारों के सन्यास की जगह संसार छोड़ा दिया और देह से न्यारा होने की जगह कर्म और सम्बन्ध से न्यारा होना सिखा दिया। बस यहीं से गलती हो गई और इसी से हम दूर होते गए। परमात्मा तो सभी का है ना! अगर हम कर्म और सम्बन्ध से न्यारा हो जाएंगे तो परमात्मा को कोई पसंद नहीं करेगा ना! इसीलिए



उससे मिलना आसान है केवल देह भान से न्यारा होना उसके नज़दीक पहुंचने का आधार है। आज पिछले नौ दशकों से परमात्मा का दिव्य अवतरण केवल हमारे लिए ही हो रहा है। लेकिन हमारे मिलन की तैयारी का आधार जब तक नहीं होगा तब तक उससे मिलकर भी हम उसकी समझ

नहीं पाएंगे। क्योंकि वो शरीर से न्यारा है, परमधाम निवासी है। हमें उसको जानने के लिए वैसे देह भान से न्यारा बनना पड़ता है। आज भी उसकी उपस्थिति माउंट आबू में स्थित परमात्मा के घर में होती रहती है और वो उतने समय से लोग अनुभव कर-करके सुनाते रहते हैं कि परमात्मा हैं तो यहीं हैं और

कहीं नहीं है। ये एक साधारण माता से लेकर एक वैज्ञानिक तक को तब अनुभव होगा जब वो सत्य साफ मन से, अपने मूल आत्मिक स्वरूप में आएंगे और वो ही मूल स्वरूप हमें उससे मिलवाएगा। तो चलो मूल स्वरूप में आएँ और परमात्मा से मिलन का आनंद उठाएँ।

सत्य परमात्म पहचान की पाँच कसौटी

किसी की पहचान या परिचय किसी न किसी के साथ जोड़कर दिया जाता है, तो वो परिचय सही नहीं माना जाता। जैसे अगर व्यक्ति के साथ वस्तु को हटा दें तो वस्तु अलग है, व्यक्ति अलग है, दोनों का अस्तित्व अलग है, दोनों का प्रयोग अलग है। वैसे ही परमात्मा की पहचान और उसको पहचानने का आधार दोनों ही अलग हैं। सबने प्रयास किया लेकिन अपने अपने आधार से। सबने



कहा कि परमात्मा सबका एक है लेकिन व्याख्या अलग-अलग की। सभी धर्म ने अलग कर दिया, सभी वर्ग ने अलग कर दिया सभी असमंजस की स्थिति में आ गए कि किसको माने या किसको ना मानें! इस ऊहापोह की स्थिति से निकलने के लिए परमात्मा के पहचानने की पाँच कसौटी जो मान्यता प्राप्त है, वो आपके सामने रख रहे हैं, आप देखें, निहारें अपने परमपिता को और सोचें।

जो सर्वमान्य हो

कहा जाता है कि जिसको सभी एक आवाज़ में स्वीकार करें वो परमात्मा हो सकता है।

लेकिन अन्य अनेक धर्मों में जो भी देवी-देवता या धर्म पिता या महान आत्मा हैं उसको एक विशेष वर्ग ने अपनाया, सभी ने मान्यता नहीं दी। अगर उसे सभी मान्यता दें तो भगवान हो सकता है।

जो जन्म-मरण के चक्र से हो न्याता

कहा जाता है जिसका जन्म होता

है उसकी मृत्यु भी होती है। तो जिसका जन्म और मृत्यु हो वो कर्म भी करेगा और उसके कर्म का खाता भी बनेगा और उसे चुकाना भी होगा। अगर भगवान भी ये सबकुछ करेगा तो हमको निकालेगा कौन? इसलिए जो न्याता है उसी को तो हम पुकारते हैं। तो जो जन्म-मरण में आये तो वो भगवान तो नहीं हो सकता।

जो सर्वज्ञ हो

इस दुनिया में सबके माता-पिता, बंधु-सखा सब दिखाए जाते हैं। लेकिन परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है

जिसकी न माता है, न पिता है, न बंधु है, न सखा है इसलिए वो भगवान के वर्ग में आ सकता है।

जो सर्वज्ञ हो

शास्त्रों में दिखाते हैं कि सभी देवता, ऋषि-मुनी किसी न किसी के पास अपने प्रश्न का उत्तर लेने जाते थे। लेकिन परमात्मा सर्वज्ञ सबकुछ जानता है, उसे किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं। जो सर्वज्ञ है वो ही परमात्मा है।

जो गुणों में अनंत हो

परमात्मा के गुणों को सबके साथ

जोड़ा जाता है। सागर के साथ जोड़ा जाता है। भक्ति में जितने भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, महिमावान चीजें हैं उनके साथ परमात्मा की तुलना की जाती है। फिर भी कहते हैं कि ये तो उसके सामने कुछ भी नहीं है, सिर्फ तुलनात्मक कहा जात है। तो जिसके लिए हमारे लिए गुणों का वर्णन करना मुश्किल हो, वो परमात्मा है।

ये कुछ बिंदु हैं जो परमात्मा के निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिवान गुणों के सागर के रूप में पहचानने में मदद करेंगे। तो आइए आप भी सम्बन्ध जोड़ें।

कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

भारत को विश्व गुरु बनाने में संस्थान की अहम भूमिका

आज के परिदृश्य में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव व समृद्धि का संदेश दे रहा है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान की अहम भूमिका रहेगी। क्योंकि ये संस्थान न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अध्यात्म की अलख जगा रहा है।
- लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, भारत।



परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण



इस संस्थान में यहाँ आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहाँ का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना जरूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। इसी कारण इन्होंने आज विश्व के 140 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ये ब्रह्माकुमारी संस्थान बखूबी कर रहा है। - रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, भारत।

भारत में एक मात्र संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। वे मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारी जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है।
- माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.।



विश्व शांति प्रसार की अद्भुत संस्था



दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पाई गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, योगिक भूमिका निभा सकती है, ऐसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारी। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। - श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धराज।

मुझे साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। - रसिक पीठाधीश्वर महत जन्मोत्सवशरण, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या।



यहाँ शास्त्रों में वर्णित दिव्यता का अनुभव हुआ



जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादी जी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। - एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज, अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।

परमात्मा का 'ज्योति स्वरूप' सभी ने स्वीकारा

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमेश्वर परमसत्ता, निराकार, परमात्मा की सत्ता स्वीकारी।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव की महिमा गाई हुई है। वो सर्वोच्च है, सर्वज्ञ है। जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले रामेश्वरम ने शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है एकोंकार निराकार, मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा, जीसस में कहा गॉड इज लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्मय परमात्मा का यादगार ज्योतिर्लिंग दिखाया है। जिसका सभी धर्मों में स्मरण किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार सृजनहार, पालनहार, वही परमसत्ता, परमात्मा परमेश्वर ही है।



विश्व के सभी धर्मों की आध्यात्मिक शिक्षाओं को ध्यान से देखने पर प्रस्फुटित होता है कि भले ही भाषाएं, रीति-रिवाज और उपासना-पद्धतियाँ भिन्न हों, परंतु सर्वशक्तिमान परमात्मा का स्वरूप एक ही है - निराकार, ज्योति स्वरूप, और कल्याणकारी। मानव इतिहास में चाहे जिस युग में धर्म प्रकट हुआ हो, प्रत्येक ने परम सत्ता को अपने-अपने

तरीके से, परंतु समान भाव से स्वीकार किया है।

भारतीय धर्म ग्रंथों में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान परमात्मा के निराकार और परमपिता स्वरूप की गहरी झलक देता है। युद्धभूमि पर अर्जुन को दिए गए उस परम ज्ञान को ईश्वर को अजन्मा, अविनाशी और प्रकाशमय बताया गया है। इसी प्रकार श्रीराम ने भी रावण से युद्ध से पूर्व रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना कर उस परम ज्योति-स्वरूप ईश्वर की आराधना की, जो बताता है कि

ईश्वर कोई देहधारी नहीं, बल्कि प्रकाश स्वरूप पिता है। इन सभी धर्मों की शिक्षाओं का सार एक ही बात को उजागर करता है- निराकार ज्योति लिंग परमात्मा ही समस्त सृष्टि के रचनाकार, संचालक और पालक हैं। मानवता के विविध मार्ग अंततः उसी एक परम सत्य तक पहुँचते हैं। नाम भले अलग हों, परंतु लक्ष्य एक है - परमपिता, वह ज्योति स्वरूप परमात्मा, जो अनादि भी है और अविनाशी भी।

नूर ए इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का-मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असकद और अल्लाह कहा। उसे वो लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योति स्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप में उस परम सत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। उसके अलावा विश्व भर के सभी वेद, शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कही न कही परमात्मा के ज्योतिस्वरूप की व्याख्या की गई है। वो ही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता, परमपिता परमेश्वर, परमात्मा शिव हैं।

इसई मत में भी "गॉड इज लाइट" कहकर प्रभु को ज्योति स्वरूप माना गया है। चर्च में जलाई जाने वाली मोमबत्ती उसी अनंत प्रकाश का प्रतीक है।

निराकार, निर्वैर, सत्नाम

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव जी ने कहा है कि एकोंकार निराकार, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सत्नाम है, जिसको कभी कोई काल नहीं खा सकता। ये सभी महिमा गुरु वाणी में लिखी गई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्नाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

खुशी के लिए शिवरात्रि के पावन पर्व पर लें पाँच संकल्प

सबकी सुबह स्वर्णिम सुबह हो तो कितना अच्छा हो। उठना एक बात, तरोताजा होकर उठना अलग बात। हम सबकी दिनचर्या आज कल थोड़ी उलझी हुई सी है। कारण मानसिक, शारीरिक थकान भी है, कुछ चिंता, दुःख, अशांति भी है। ऐसे में स्वस्थ और सुदृढ़ जीवन की कल्पना तो नहीं कर सकते ना। परमात्मा के बच्चे होने के नाते उसके जैसा होना हमारी नियति होनी चाहिए। अगर वैसा ही हो जाए तो आप सोचो आपसे लोग प्रभावित भी होंगे और आपको फॉलो भी करेंगे। इस पावन शिवरात्रि पर्व पर अगर हम कुछ संकल्पों पर ध्यान दें तो अपने को उस लायक बना सकते हैं। ये हमारे लिए व्रत भी होगा, और यही उपवास भी।

► **सुबह की शुरुआत मेडिटेशन से-** पुराने समय में सभी सुबह उठकर सबसे पहले एक ऐसा संकल्प करते थे कि आज का पूरा दिन मेरा खुशी वाला हो, सफल हो, सबसे सहयोग मिले, आदि-आदि। और उसी संकल्प में भगवान का ध्यान भी करते थे। चाहे उन्हें समझ आए न आए लेकिन ध्यान अवश्य करते थे। तो ऐसे क्यों न हम अपनी दिनचर्या फिर से शुरू करें।

हम भी उनके प्रति जागरूक रहें। अगर प्रकृति शुद्ध है तो हम सबका शरीर भी स्वस्थ होगा और साथ-साथ बाहर का वातावरण भी शुद्ध रहेगा। तो कम से कम अच्छे भाव प्रकृति को दो। जल और ऊर्जा का संरक्षण करें।

► **केवल शुभ कर्म करेंगे-** लोगों से पूछो तो हमेशा कहते हैं कि मैं तो कर्मयोगी हूँ। मेरे से तो बुरा काम होता नहीं है। लेकिन परमात्मा कहते हैं कि हम

सभी को जो भी कर्म करना है वो केवल परमात्मा के अर्थ करेंगे तो वो कर्म शुभ कर्म माना जाएगा। बाकी जो भी हम कर्म करते हैं वो कर्म हमारे स्वार्थ के लिए तो हो सकता है लेकिन अगर परमात्मा का नाम शामिल हो जाए तो परमार्थ के लिए होता है।

► **सात्विक भोजन ही स्वीकार करेंगे-** आहार, विचार को जन्म देता है। अगर उसमें सात्विक आहार हो तो सोने पर सुहागा।

शाकाहारी होना आम बात है। लेकिन सात्विक होना खास बात है। सात्विक भोजन में बिना प्याज, लहसून के परमात्मा की याद में बना भोजन ही हम स्वीकार करें तो हमारा मन अति शुद्ध होता चला जाएगा। और हमारी पवित्रता भी बढ़ेगी।

इन्हीं पाँच शुभ संकल्पों से अपनी दिनचर्या की शुरुआत करें और इसको लम्बेकाल तक अभ्यास में लाएं तो जीवन रचनात्मक बन जाएगा।



► **सदा सभी के प्रति शुभ भावना रखेंगे-** दुआएं कमाने का साधन है सभी को खुशी देना। सबके भले के बारे में सोचना और सबकी आगे बढ़ते देखना, सभी के प्रति शुभ भावना रखना ये हमारी दिनचर्या का हिस्सा हो। ये भी हमें सफलता दिलाता है।

► **प्रकृति के प्रति जागरूक रहेंगे-** वैसे तो अगर कोई हमें सबकुछ मुफ्त में देता है तो वो है हमारी प्रकृति। लेकिन हमारी भी सामाजिक जिम्मेदारी है कि

धरा पर परमात्म अवतरण की आवश्यकता क्यों?

आज संसार जिस दहलीज पर खड़ा है वहाँ चारों ओर असुखा, अशान्ति, कलह और मूल्यहीनता की गहरी छया दिखाई देती है। मानव ने विज्ञान, तकनीक, सुविधाओं में अत्यधिक प्रगति की है लेकिन मन की शांति, प्रेम और पवित्रता लगातार दूर होती जा रही है। आज का मनुष्य बाहरी दुनिया को तो संवार रहा है, किंतु अपने अंतर-चेतना, संस्कारों और चरित्र को संवारने में असमर्थ हो गया है। ऐसे समय में परमात्मा के अवतरण की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण बन जाती है।



मनुष्य कितना भी महान क्यों न हो, वह त्रुटिरहित नहीं है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से प्रभावित हो जाता है। इन पाँच विकारों से मुक्त हुए बिना, दुनिया में स्थायी शांति और सुख स्थापित नहीं हो सकते। मनुष्य स्वयं इन विकारों का दास बनकर जी रहा है - तो वह दूसरों को कैसे मुक्त करेगा? यही कारण है कि कुछ कार्य ऐसे हैं जो मनुष्य नहीं कर सकता, जिन्हें केवल परमात्मा ही कर सकते हैं :

- 1 आत्मा को उसके मूल स्वरूप शांति, पवित्रता, प्रेम और शक्ति का सच्चा ज्ञान देना।
- 2 निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति का वास्तविक अनुभव कराना।
- 3 पुरानी, विकृत हुई सृष्टि का पुनः सृजन करना, जिसे शास्त्रों में सत्ययुग या स्वर्णिम युग कहा गया है।
- 4 कर्मों का स्टीक ज्ञान और पवित्रता की शक्ति देना, ताकि आत्माएं पुनः उच्चतम बन सकें।

आज संसार में जो अराजकता, नैतिक पतन और मानसिक तनाव है, वह स्पष्ट संकेत है कि मानव प्रयासों से अब यह विश्व सुधरने वाला नहीं। ऐसी घड़ी में परमात्मा स्वयं पिता, शिक्षक, सतगुरु बनकर आता है और हमें राजयोग की शिक्षा देकर भीतर से रूपांतरित करता है।

इसलिए आज सबसे बड़ी जरूरत परमात्मा के इस दिव्य अवतरण की है - क्योंकि उसी के माध्यम से ही नई, श्रेष्ठ, पवित्र और शांतिमय दुनिया पुनः स्थापित हो सकती है।

चौथा और अत्यंत महत्वपूर्ण कर्तव्य है - आत्माओं को मुक्ति और जीवन मुक्ति की प्राप्ति कराना। परमात्मा योगबल द्वारा आत्माओं के पाप कर्मों का बोझ समाप्त करते हैं, जिससे वे बंधनों से मुक्त होकर सुख-शांति का अनुभव कर सकें। इस प्रकार परमात्मा का आगमन मानवता के उद्धार, संस्कार परिवर्तन और दिव्य विश्व व्यवस्था की पुनर्स्थापना के लिए होता है। उनका आगमन ही सृष्टि की नई सुबह का आरंभ है।

AWAKENING
The Brahma Kumaris
TV Channel is available on

Channel	Channel No.
TATA sky	1084
JioTV	1060
GTPL	578
IN	996
NXT DIGITAL	984

For C-Satellite Settings (Phase of Mod Tx)
Frequency Details: Satellite - GSAT 30, Orbital Position - 83°E,
Downlink Frequency - 12.00 MHz, Polarization - Horizontal,
Symbol Rate - 12.00 MSPS, Modulation - QPSK, 52 BPSK,
FEC - 3/4, Compression - MPEG-4

— स्थानीय सेवकन्द्र —

अमरत्व की ओर ले जाने वाला महापर्व शिवरात्रि

भगवान को याद करना, उसको बुलाना, उसकी ओर निहारना, ये बहुत ही सहज रूप से चला आता है। जब किसी मनुष्य

अंधकार है। ये कैसा अंधकार है? दो तरह का अंधकार है मनुष्य के अन्दर। ये बाहरी अंधकार की बात नहीं कि रात हो गई है, दिन छिप गया

नहीं कहते कि शास्त्र पढ़ने से, उपनिषद पढ़ने से, वेद पढ़ने से हम अंधकार से प्रकाश की ओर चले जायेंगे। ये नहीं कहते हैं प्रभु! हमें

अंधेरे में मनुष्य सही दिशा में नहीं चल सकता। अगर चलने की कोशिश भी करेगा तो भटकने और ठोकर भी अवश्य खायेगा। तो रात्रि का सम्बन्ध यहाँ रोज होने वाली रात्रि से नहीं है परंतु अज्ञान की रात्रि से है। हम कहते हैं- हे प्रभु! आप्रो हमें सत्य राह दिखाओ, सदबुद्धि दो जिससे हम जीवन में ठोकरें खाने से बच जायें। यही तो हम कर्मण्य करते हैं परमात्मा से। अब वो आकर क्या करता है जो हमें ज्ञान-अज्ञान में चढ़े सतरों से, चढ़े यहाँ पड़ितों से जो सुना है, भगवन् सही हो लेकिन उससे मिल भी नहीं सके और अंधेरे से मुक्त भी नहीं हो सके और न ही कुछ प्राप्ति हुई। तो सही अर्थ में ज्ञान इस महान पर्व के पीछे छिपे आध्यात्मिक रहस्य को।

पर कोई मुसीबत आती है, जब उसे कोई सहारा नजर नहीं आता, जब उसके जीवन में दुःख बहुत बढ़ जाते हैं, निराशाओं की काली रातें उसको कुछ भी मार्ग देखने नहीं देती, जब सफलता उससे दूर जाती है, जब परिवारों में अन्तर्होनी घटनाएं घटने लगती हैं तब लोग उसे प्यासी नजरों से निहारते हैं, याद करते हैं, बुलाते हैं, हे भगवान! आओ मदद करो। देखो इसमें बुलाने में कितना अपनापन है। मदद भी उससे ही मांगी जाती है जो मदद कर सकता हो।

भारत में श्रीमद्भगवद् गीता में भी और रामचरित्र मानस में भी ये लिख दिया है कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब भगवान आते हैं और अधर्म का विनाश करते हैं, दुःखों की समाप्ति करते हैं, असुरों का संहार करते हैं। भिन्न-भिन्न बातें हैं। धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं, भक्तों की, पुनः आत्माओं की, अच्छे लोगों की रक्षा करते हैं। तो वो एक मान्यता चली आ रही है। लोगों को ये पूर्ण विश्वास रहता है कि वो आयेगा जरूर। वो आता है, वो मदद अवश्य करता है।

दूसरी बात आप देख लीजिए भारत में हमारे यहाँ दो-तीन बातें प्रसिद्ध रूप से प्रचलित हैं, गायन है उनका, हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। ये लोग शास्त्रों अनुसार भक्ति में गायन करते रहते हैं। किसी भी विशेष कार्य से पहले ये मंत्र है कि "तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय"। तो कैसा अंधकार है? क्या है ये अंधेरा?

तो देखिए लोग शास्त्र पढ़ने से पहले भी कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। शास्त्र पढ़ने के बाद, भक्ति करने के बाद पुनः यही गायन करते हैं, इसका अर्थ है कि अभी प्रकाश में गये नहीं हैं। अंधकार ही



वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

है, अंधेरा हो गया है हमें प्रकाश जलाना है, लाइट जलानी है, अपने घर को रोशन करना है, ये तो कॉमन बातें हैं। लेकिन एक है मनुष्य के अन्दर अज्ञान का अंधकार, और दूसरा है विषय-विकारों का घोर अंधेरा। अज्ञान, कैसा अज्ञान? मनुष्य ये नहीं जानता कि मैं कौन हूँ, मेरी शक्तियाँ क्या हैं, मेरे मूल संस्कार क्या हैं, मेरी प्युरिटी क्या है, मैं सृष्टि के आदि में किस स्वरूप में थी, भगवान कौन है, उससे मेरा क्या नाता है, मुक्ति और जीवन मुक्ति क्या है, राजयोग का पथ क्या है, भगवान के मिलने का मार्ग कौन सा है और उससे मिल करके क्या मिलता है। क्यों मिले हम उसे, क्यों हम उसे याद कर रहे हैं, सृष्टि का आदि-मध्य-अन्त क्या है, किसने ये संसार रचा है, क्यों रचा है, कब रचा था, उसके पीछे रचने वाले का उद्देश्य क्या था, ये माया है, मुक्त अवस्था किसे कहते हैं, स्वर्ग किसे कहते हैं, इसके बारे में मनुष्य को ज्ञान नहीं है। इसको कहते हैं सम्पूर्ण अज्ञान।

इस अज्ञान के कारण ही पाप कर्मों के कारण, क्योंकि कर्मों का भी गुह्य ज्ञान मनुष्य को नहीं है। पाप को लोग पुण्य समझ रहे हैं। पुण्य से दूर होते जा रहे हैं, कर्मों की गुह्य गति का भी किसी को भी पता नहीं है, ये अज्ञान है, ये अंधकार है। इसके लिए ही प्रार्थना की जाती है कि "हे प्रभु! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो"। ये

ले चलो। तो प्रभु को आना पड़ता होगा ना!

इसी की यादगार में तो शिवरात्रि मनाई जाती है। बस यही रहस्य शिवरात्रि के सम्बन्ध में हम सभी के सामने स्पष्ट करना चाहते हैं, प्रत्यक्ष करना चाहते हैं। ताकि सभी पुनः अंधकार से प्रकाश की ओर चलें। केवल गाने से तो काम नहीं चलेगा, केवल पढ़ने-लिखने से तो अंधकार दूर नहीं हो सकता, तो भगवान को आना पड़ता है, अंधकार में।

ये रात्रि कोई ये रोज होने वाली रात्रि या दिन की बात नहीं है वो तो रोज हो रही है। रोज सूर्य उदय होता है, प्रकाश फैलता है, दिन निकल आता है, सूरज अस्त होता है, अंधकार छाने लगता है, रात्रि हो जाती है। हम सभी विश्राम में चले जाते हैं। ये क्रम तो सतत चलता आता है। लेकिन संसार में अज्ञान का अंधकार छा गया है।

आज चारों ओर देख लीजिए, किसी को भी अध्यात्म का, स्वयं का, अपने परमपिता का कोई भी ज्ञान नहीं रहा है। इसलिए भौतिकता की ओर लोग बढ़े जा रहे हैं। भिन्न-भिन्न तरह की विद्याएं, भिन्न-भिन्न तरह की एजुकेशन, भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रीयां चारों ओर दी जा रही हैं। एजुकेशन बढ़ती जा रही है लेकिन फिर भी अंधकार भी उतनी ही तेजी से बढ़ता जा रहा है। तो क्या इस भौतिक ज्ञान ने, क्या इस शैक्षणिक ज्ञान ने मनुष्य के अंधकार को दूर नहीं किया! आज तो मनुष्य सोचता है वो पहले की भेंट में ज्यादा बुद्धिमान है, आप इस बात से सहमत होंगे। आज कोई भी अपने को कम बुद्धिमान नहीं मान रहा है। जिसके पास जितनी ज्यादा डिग्रीयां हैं, ज्यादा एजुकेशन है वो अपने को उतना ही ज्यादा बुद्धिमान मान रहा है, परंतु क्या इन सबसे मनुष्य रियल में ज्ञानवान, बुद्धिमान, बना है? क्या उसको सद्विवेक प्राप्त हुआ है? क्या उसको सदबुद्धि मिली है? क्या उसके कर्म सुधरे हैं? तो वास्तव में ये रात्रि अज्ञान की रात्रि है।



नांदेड़-महाराष्ट्र। महाराष्ट्र के कृषिमंत्री दत्तात्रयजी भरणे का नांदेड़ आगमन पर उनसे स्नेह मुलाकात के पश्चात् उन्हें यौगिक खेती से सम्बन्धित साहित्य भेंट करते हुए किसान ब्रिगेड के नांदेड़ जिलाध्यक्ष कृषिभूषण ब्र.कु. भगवान इंगोले।



धडगांव-महाराष्ट्र। नंदुरबार लोकसभा सांसद गोवाल पाडवी से स्नेह मुलाकात कर परमाल संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता।



बिलासपुर-टिकरापाड़ा(छ.ग.)। विश्व मधुमेह दिवस पर अपोलो हॉस्पिटल द्वारा आयोजित 'वीकथन 3.0' में उपस्थित रहे आर्म्जित ब्र.कु. मंजू, विधायक अमर अग्रवाल, महिला आयोग की अध्यक्ष किरणमयी नायक, अपोलो के यूनिट हेड अभय गुप्ता, ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. ईश्वरी, ब्र.कु. प्रीति तथा अन्य।



जशपुर-छ.ग.। दीपावली के अवसर पर भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष प्रबल प्रताप सिंह जूदेव को शुभकामनाएं देने के पश्चात् समूह चित्र में साथ है ब्र.कु. सरिता व अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।



बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। पुलिस आयुक्त सीमांत कुमार सिंह से मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिंदु। साथ है अन्य ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें।



शहडोल-म.प्र.। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय शाखा में आयोजित 'तनाव मुक्त प्रबन्धन कार्यशाला' के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. फल्लवी, ब्रह्माकुमारीव धार्मिक प्रभाग के जेनरल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण,ईश्वरी, रमाकांत व प्रेमकांत,शाखा प्रबन्धक, प्रणव कपूर,सहायक प्रबन्धक तथा अन्य बैंक के समस्त स्टाफ।



आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव जरूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी जरूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीजें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है। तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।



कवर्धा-कबीरधाम(छ.ग.)। पुलिस अखीक धर्मेन्द्र सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलेश्वरी।



व्यारा-गुज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् गुजरात राज्य योग बोर्ड व्यारा जिला कोऑर्डिनेटर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा बहन।

परमात्म ऊर्जा

दो बातों पर विशेष अंडरलाइन



मूड ऑफ

बापदादा अपना मूड ऑफ करते हैं क्या? कभी नहीं ना, तो फॉलो फादर। बापदादा के पास स्पेशल ब्राह्मण बच्चों को देखने के लिए वतन में बढ़िया टीवी है, उसमें सबकी अपनी-अपनी, ग्लान्-ग्लान् मूड आती रहती है, देखने में इतना मजा आता है... आप समझ सकते हो। महादानी बनने वालों की मूड बदलती नहीं है। दाता हो ना, देते जाओ। कितनी बार देवता बने हो? अनेक बार बने हो ना। देवता अर्थात् देने के संस्कार वाले। कोई कुछ भी दे लेकिन आप सुख, शान्ति, प्रेम की अंचली दो। लोगों के पास दुःख, अशान्ति के अलावा कुछ नहीं है, वह आपको क्या देंगे? वही देंगे जो उनके पास है। आपके पास तो सुख शान्ति का गंडार है, वह सबको देते जाओ।

अन्तिम पेपर

सभी ब्राह्मणों का अन्तिम पेपर यही छोटा-सा है - नष्टोमोहा,

स्मृति स्वरूप का। जीवन मुक्त होने से पहले मेहनत मुक्त बने, यह स्थिति समय की समीप लाएगी और आपकी यह स्थिति आत्माओं के लिए मुक्ति का दरवाजा खोलेगी। बापदादा बच्चों के मीठे-मीठे खेल कई बार देख चुके हैं। कुछ भी हो, हिमालय से भी बड़ा सौ गुणा समस्या का स्वरूप, चाहे तन, मन, व्यक्ति, प्रकृति द्वारा समस्याएं व परिस्थिति, आपकी स्वस्थिति के आगे कुछ भी नहीं है। स्वस्थिति का साधन है - स्वमान। स्वमान नैचुरल रूप में हो, याद करना न पड़े, बार-बार स्वमान की मेहनत नहीं करनी पड़े। मैं हूँ ही स्वदर्शन चक्रधारी, मैं हूँ ही नूरे रत्न, मैं हूँ ही दिलतख्तनशीन आत्मा...। कल्प पहले कौन बने थे? वह आप ही हो। स्वमान का नैचुरल रूप ही अन्तिम पेपर में पास विद ऑनर नष्टोमोहा, स्वरूप बनाएगा।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। भारतीय चार्टर्ड एकास्टेट्स संस्थान की जबलपुर शाखा द्वारा तेलनेस वीक के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज शिव उपहार भवन में आयोजित 'स्वास्थ्य एवं ध्यान' कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विनीता, कैसर रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रीति जैन, डॉ. निखिल गिरि,एमडी मेडिसिन, डॉ. मीनाबाई,एमडी,एनेस्थीसिया, शाखा सचिव सीए प्रणव अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष सीए कैलाश अग्रवाल, उपाध्यक्ष सीए चांदनी आहुजा, मिस्टर अरव्यक्ष सीए तरुण पारवानी, सीए कमल वालेचा, सीए विकास श्रीवास्तव तथा अन्य की उपस्थिति रही।



नवसारी-मरोली(गुज.)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में रेलवे स्टेशन पर आयोजित 'व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी' के माध्यम से लोगों को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करने के पश्चात् सहायक स्टेशन मास्टर विजय मोणा को इश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन एवं ब्र.कु. बाबू भाई पटेल।

कथा सरिता

एक जंगल में एक छोटी-सी चिड़िया रहती थी। एक दिन भयंकर आग लग गई। सारे जानवर अपनी-अपनी जान बचाकर भागने लगे। चिड़िया ने देखा कि आग बढ़ती जा रही है और जंगल जलकर खत्म हो जाएगा। वह पास के तालाब पर गई, अपनी छोटी



चोंच में थोड़ा-सा पानी भरकर आग पर डालने लगी। यह देखकर दूसरे जानवर हँसने लगे - "इतने से पानी से क्या आग बुझेगी?" लेकिन चिड़िया ने शांत होकर कहा, "मैं जानती हूँ कि मेरी चोंच

से आग नहीं बुझेगी, लेकिन मैं अपना कर्तव्य तो निभा सकती हूँ।" उसके निरंतर प्रयास को देखकर कुछ और चिड़िया भी जुड़ गईं,



छोटी चिड़िया की हिम्मत

फिर हिरण, बंदर, हाथी सारे मिलकर आग बुझाने लगे। धीरे-धीरे मिलकर सबने उस आग को रोक लिया।

शिक्षा : चाहे परिस्थिति कितनी भी बड़ी क्यों न हो यदि हम अपने हिस्से का प्रयास करते रहें, तो असंभव भी संभव बन सकता है। छोटे कदम भी बड़ी शुरुआत कर सकते हैं।



इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। विश्व यादगार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सड़क दुर्घटनाओं में मृतकों को श्रद्धांजलि देने के लिए व सड़क सुरक्षा हेतु प्रतिज्ञा करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी, यातायात विभाग के डीसीपी आनंद कलादगी, होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष सुमित सूरी, वी1 हॉस्पिटल के डायरेक्टर एवं ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. एएल शर्मा, आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दिलीप नलगे तथा अन्य।



कामठी-आदर्श नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर स्टेट ड्रग इनफॉर्मेशन सेंटर द्वारा मेडसेफ्टी कैपेन के पश्चात् समूह चित्र में निशा राउत,फार्मासिस्ट, संगीता भिवगडे,फार्मासिस्ट, ब्र.कु. प्रेमलता तथा अन्य।



ग्वालियर-म.प्र.)। विक्रान्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा एआईसीटीई ट्रेनिंग एंड लर्निंग(अटल) अकादमी के तत्वावधान में चल रही 6 दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में आमंत्रित वरिष्ठ राजयोग ध्यान प्रशिक्षक एवं मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. प्रहलाद सिंह 'आर्ट ऑफ पॉजिटिव थिंकिंग एंड मेडिटेशन फॉर वर्क लाइफ बैलेंस' विषय पर सभी को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में विक्रान्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. पी.एस. चौहान, आईआईटी रुड़की के विभागाध्यक्ष मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. अक्षय द्विवेदी तथा अन्य अतिथियों की उपस्थिति रही।



पूर्णा-परभणी(महा.)। महाराष्ट्र शासन एवं ब्रह्माकुमारीज माउंट आबू के तत्वावधान में कै.विठ्ठलराव मोरे निवासी मुक्त बंधीर विद्यालय में आयोजित दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सक्षमीकरण कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता, ब्र.कु. शारदा,परभणी, ब्र.कु. दीपाली,नाशिक, ब्र.कु. अनीता,मानवत, मुख्य अध्यापक अभय पौल, मोहनराव मोरे, बालाजी कदम तथा अन्य।



मुंबई-घाटकोपर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज योग भवन के द्वारा नेशनल फेडरेशन फॉर ब्लाइंड एसोसिएशन के नेत्रहीन भाई-बहनों के लिए आयोजित राशन किट वितरण कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी। मौके पर उपस्थित रहे आध्यात्मिक प्रेरक वक्ता,प्रसिद्ध स्तंभकार और ब्रह्माकुमारीज मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. निकुंज एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया।



खजुराहो-म.प्र.)। 'संगम - गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' अभियान के अंतर्गत बमौटा के होली चाइल्ड कार्वेट स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे ब्र.कु. नीरजा, ब्र.कु. रामश्री बहन, ब्र.कु. पुरुषोत्तम, ब्र.कु. दीपक, विद्यालय के प्राचार्य ललित सिंह, शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण।



बीदर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर डॉ. कृष्णमूर्ति अस्पताल के सहयोग से आयोजित स्वास्थ्य जाँच शिविर में सभी भाई-बहनों का स्वास्थ्य जाँच करते हुए डॉ. रघु कृष्णमूर्ति और डॉ. आरती कृष्णमूर्ति।



रतलाम-नामली(म.प्र.)। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि देते हुए जिला महिला कांग्रेस अध्यक्षा वंदना पुरोहित, नगर परिषद उपाध्यक्ष पूजा योगी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता तथा समस्त रामायण मंडल के सदस्यगण।

AWAKENING
The Brahma Kumaris
TV Channel is available on

	Channel No. 1084
	Channel No. 1060
	Channel No. 578
	Channel No. 996
	Channel No. 984

OTT: 1084 - 1084, 1060 - 1060, 578 - 578, 996 - 996, 984 - 984
 1084 - 1084, 1060 - 1060, 578 - 578, 996 - 996, 984 - 984
 Call: 022-2610-1084, 022-2610-1060, 022-2610-578, 022-2610-996, 022-2610-984

CHANNEL NUMBER

	1084 Tata Sky		1084 Veevacon D2H
	1060 Jio TV		578 Airtel Digital
	1087 Dish TV		996 Sun Direct

For C-Band Dish Settings Please Visit www.bk.org
 Frequency Details: Satellite - BSAT 3D, Orbital Position - 82°E
 Downlink Frequency - 4234 MHz, Polarization - Horizontal
 Symbol Rate - 17.00 MSPS, Modulation - DVB-S2 8PSK
 FEC - 3/4, Compression - MPEG-4



पन्ना-म.प्र.। गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोता, पूर्व कैबिनेट मंत्री कुसुम सिंह मेहदेले, पूर्व प्राचार्या निशा जैन तथा अन्य।



मालिया-हार्दोना(गुज.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए संसद सभ्य राजेश चूड़ासमा, विधायक भगवान करणठिया, भाजप जिला प्रमुख चंदु मकखना, जिला पंचायत प्रमुख हरेश धुंवर, सरपंच जीतु सिसोदिया, सामाजिक कार्यकर्ता महेन्द्र गांधी, हमीर सिसोदिया, निलेश रूपारेलिया तथा ब्र.कु. मोता बहन।



केरौद-गुज.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'दिव्य प्राप्ति' मुलाकात में अये सचिव अरुनी जोशी, ग्राम, कौशल्य विकास, रोजगार विभाग, गुजरात राज्य गांधीनगर से ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गोता। साथ हैं ब्र.कु. अल्पा एवं सी.आर.सी. कोऑर्डिनेटर संजय जी।



बिजावर-म.प्र.। 'संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' अभियान के अंतर्गत सबजेल में कैदी भाइयों के लिए आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. साधन, सब जेल के सहायक जेल अधीक्षक मुकेश मोझी एवं नर्स रेनु।



पणजी-गोवा। 'सुखी जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए गोवा व सिंधुदुर्ग सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा। कार्यक्रम में उपस्थित रहे प्रधानाचार्य संजय बुरबुरे, बैंक ऑफ इंडिया स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, पणजी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण व प्रबंधक।



कोरबा-छ.ग.। जिला जेल कोरबा में ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम में कैदी भाइयों को तनाव मुक्त जीवन कैसे बने इस पर टिप्स देते हुए ब्र.कु. विद्या बहन। मंचासीन हैं जेल अधीक्षक अमितेश साहू एवं ब्र.कु. भाई-बहनें।

वर्तमान समय में ब्राह्मण आत्माओं का ईश्वरीय कर्तव्य



आज चारों तरफ विनाश के बादल घिर चुके हैं- प्रकृति असंतुलित है, मनुष्य की बुद्धि अशान्त है, समाज में अविश्वास और असुरक्षा बढ़ रही है। ऐसे नाजुक समय में ईश्वरीय परिवार के ब्राह्मण बच्चों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हम केवल साधारण मनुष्य नहीं बल्कि शिव पिता के रुहानी सेवक हैं, जिन्हें इस अहंकारमयी युग में मन्सा शान्ति के सागर की किरणें फैलानी हैं।

आत्म-चेतना में स्थित रहना- शक्ति और शान्ति का मूल

बाबा ने बार-बार कहा है कि "अब देह-भान से मुक्त आत्मा की स्मृति में रहो" यही वर्तमान समय का प्रथम पुरुषार्थ है। जब आत्मा स्वयं को ज्योति बिन्दु समझती है और परमात्मा शिव से शक्ति-संयोग जोड़ती है, तब वह असीम शान्ति और स्थिरता की अनुभूति करती है। आत्मिक भाव की इस स्थिति से मन्सा शक्ति उत्पन्न होती है जो अदृश्य रूप से वातावरण को

परिवर्तित करती है। आज समय पुकार रहा है कि हम "श्रेष्ठ-विचार" के योगी बनें और अपनी हर सोच को शुभ, श्रेष्ठ और सात्विक बनाएं- ताकि विचारों की कम्पन से इस दुःखी संसार को ठंडक पहुंचाएं।

मन्सा सेवा द्वारा विश्व शान्ति की ज्योति जलाना

ईश्वरीय सेवा का सर्वोच्च माध्यम आज मन्सा सेवा है। जब हम योग में बैठते हैं और सच्चे प्रेम से "शान्ति" के प्रकम्पन चारों दिशाओं में भेजते हैं तो वे दिव्य शक्तियाँ नकारात्मकता को नष्ट कर वातावरण को शुद्ध करती हैं। विनाश के इन बादलों के बीच हमें "जीवित दीपक" बनकर रहना है - जो स्वयं जले और दूसरों को प्रकाश दे। हर दिन कुछ समय विश्व कल्याण के संकल्पों में लगाना यही सच्चा ईश्वरीय कार्य है।

ईश्वरीय मर्यादाओं में रहकर आदर्श प्रस्तुत करना

ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों का जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि मानवता के लिए उदाहरण है। वर्तमान समय में जब मूल्य समाप्त हो रहे तब हमें पवित्रता, संयम, सत्य और

निश्छल सेवा के आदर्शों को जीवन में धारण करना है। हमारा हर कर्म, हर वाणी और हर दृष्टि ऐसे बनें कि देखने वाला अनुभव करे- "यह आत्मा कोई ऊँच सत्ता से जुड़ी हुई है" यही निवारिणी जीवन की पहचान है।

निरंतर योग-स्मृति द्वारा आत्मा को जल बनाना, ज्वाला नहीं

जब संसार की हवाएं तपन और क्रोध में जल रही हों तब ब्राह्मण आत्मा को "शीतल जल" बनना है। इसके लिए बाबा की याद का अभ्यास निरंतर और गहरा होना चाहिए। योग की ठण्डी लहरें ही दूसरे के मन की आग को शान्त कर सकती हैं। अपने भीतर के संकल्पों को दिव्य बनाकर ही हम विश्व में शान्ति की तरंगें फैला सकते हैं।

आज का समय पुकार रहा है- "हे ब्राह्मण आत्माओं जागो और अपने मूल स्वरूप में लौटो" विनाश के इस संगमयुग में ही सच्चा निर्माण छिपा है। जब हम आत्म-चेतना में रहकर परमात्मा के सच्चे सहयोगी बनते हैं, तभी हम विश्व को एक नया सवेरा दे सकते हैं। शान्ति के सागर से शक्ति लेकर उस शीतल प्रवाह को मन्सा रूप में पूरे संसार में फैलाना- यही आज ब्रह्मावत्सों का सर्वोच्च ईश्वरीय कर्तव्य है।



वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की सेवाओं के 60वर्ष पूर्ण होने पर होरक जयंती महोत्सव के अवसर पर आंतरिक, वैश्विक एवं प्राकृतिक शान्ति हेतु शान्ति सन्देश रथ के शुभारम्भ दौरान बीजेपी प्रेसिडेंट डॉ. जयप्रकाश सोनी, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के डेप्युटी मेयर चिराग जी, बीबीएन न्यूज चैनल की एडिटर भाविसा परमार, इंडस्ट्रियलिस्ट ब्र.कु. शशिकांत, मुंबई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. पुनम, सह संचालिका तथा अन्य की उपस्थिति रही।



छतरपुर-चंदला(म.प्र.)। 'संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभी बुजुर्गों को पटका पहनाकर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. भारती।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। बाल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. कल्पना, सुरेंद्र सिंह परिहार, सत्यशोधन आश्रम संचालक देवेन्द्र भंडारी, एक्सोलेस स्कूल पूर्व प्राचार्य इसके उपाध्याय समाजसेवी शंकर लाल सोनी, वृद्ध आश्रम संचालिका प्रभा विदु तथा अन्य।



इंदौर-सुदामा नगर(म.प्र.)। दीपावली के अवसर पर प्रभु उपहार भवन में पार्षद नितिन, सोनू शर्मा व उनके साथी के आगमन पर ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. शैल, ब्र.कु. दामिनी एवं बिजनेसमैन प्रकाश चोटवानी।

गुरु में गुरुत्व को प्रखर करने की आवश्यकता

चरित्र निर्माण से ही होगा सर्व समस्याओं का समाधान



तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए एआईसीटीई के निदेशक डॉ. अमित दत्ता, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक, जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा, महाराज आर्येन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शुकला दीदी, दिल्ली, नॉर्थ कैप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश, जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मोणा, ब्र.कु. सुरेश, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. विजया एवं अन्य।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)।

ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'अवेकनेड एजुकेटर्स इनलाइटेन्ड जेनरेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के निदेशक डॉ. अमित दत्ता ने कहा कि शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन आज ऐसे लगता है कि गुरु का गुरुत्व खो सा गया है। आवश्यकता है उस गुरुत्व को वापस लाने की। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक ने कहा कि आज डिप्रेशन सबसे बड़ी बीमारी बनकर उभरा है। जिसका प्रमुख कारण शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का अभाव है। एक आदर्श शिक्षक कई पीढ़ियों का सुधार कर सकता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर दिया जाना एक अतुलनीय कार्य है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी

ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि मनुष्य सब कुछ सीख चुका है लेकिन मनुष्य-मनुष्य की तरह रहना भूल गया है। आध्यात्मिकता हमें जागरूक करती है। संस्थान के दिल्ली हरि नगर क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुकला दीदी ने कहा कि जागरूक शिक्षक वो है जिसके जीवन में मूल्यों

- एक अच्छे शिक्षक के अंदर अच्छे विद्यार्थी का होना जरूरी - आशा दीदी
- ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिक्षाविदों के लिए तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन

का समावेश है। शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। शिक्षक को चरित्र निर्माता भी कहा जाता है। जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा ने कहा कि समाज में परिवर्तन तभी आयेगा जब हमारे विचारों में परिवर्तन आयेगा। अधिभावकों की भी ये जिम्मेवारी है कि बच्चों को एक श्रेष्ठ

चिंतन दें। महाराज अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में उतारना जरूरी है। खुशहाल जीवन के लिए योग जरूरी है। संस्थान के शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुदेश ने कार्यक्रम के प्रारंभ में अपना स्वागत वक्तव्य दिया। शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुमन ने शिक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। प्रभाग के दिल्ली जोन की संयोजिका ब्र.कु. विजया ने सबको राजयोग की गहन अनुभूति कराई। ब्र.कु. चांद ने गीत के द्वारा सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में मंचासीन मेहमानों का सम्मान तिलक, पटका एवं तुलसी के पौधे भेंट कर किया गया। मंच संचालन ब्र.कु. दिव्या ने किया। कार्यक्रम में 300 से भी अधिक शिक्षाविदों एवं अन्य लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में दिल्ली, नॉर्थ कैप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश एवं जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मोणा की भी उपस्थिति रही।

- » ब्रह्माकुमारीज द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय महिला सम्मेलन
- » आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा विषय पर हुआ आयोजन
- » 1000 से भी अधिक महिलाओं एवं अन्य लोगों ने लिया भाग

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय 'आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा' विषय पर राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन योगिनी एसोसिएशन की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आर. एच. लता ने अपने संबोधन में कहा कि महिला सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता जरूरी है। आध्यात्मिकता हमें अन्दर की आवाज सुनने के लिए प्रेरित करती है। जो हमारी अंतरात्मा से निकलती है। उन्होंने कहा कि वो योगिनी होम स्टे के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा

और स्थिरता है तो नारी एक दर्पण बन जाती है। सुरक्षा का स्रोत बन जाती है। सुरक्षा का अर्थ केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक स्थिरता से है। दधीचि देह दान समिति से समाज सेविका पुनम मल्लोत्रा ने कहा कि आज सबसे बड़ी कमजोरी दूषित विचार है। आध्यात्मिकता से ही वैचारिक शुद्धि आती है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा इस दिशा में महान कार्य हो रहा है। क्योंकि आध्यात्मिकता ही हमें सकारात्मक और शक्तिशाली बनाती है। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि आत्मबल होने से ही हम



का कार्य कर रही हैं। लेकिन ब्रह्माकुमारीज संस्थान आध्यात्मिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिला सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। आत्मिक गुणों को बढ़ाती है। चरित्र निर्माण से ही सर्व समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। दृष्टिकोण में परिवर्तन की जरूरत है। बच्चे और बच्ची दोनों के साथ समान रूप से बर्ताव की जरूरत है। संस्थान के महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि नारी केवल स्वयं को सुरक्षित नहीं रखती बल्कि पूरे परिवार को सुरक्षित रखती है। अगर नारी के अन्दर शांति

जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। कार्यक्रम में एआईडब्ल्यूसी गाजियाबाद की अध्यक्षा किरण श्रीवास्तव, मेकिंग मॉडल गुरुग्राम की संस्थापक गौरी सरीन, ऑल इंडिया वुमेन लॉयर्स एसोसिएशन की अध्यक्षा डॉ. गीता, फॉर्मूला कार रेसर दिव्या मिगलानी, संस्थान के दिल्ली, करोल बाग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी एवं ब्र.कु. शक्ति ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में चांद बजाज ने गीत के द्वारा नारी सम्मान के भावों को प्रकट किया। स्वास्तिक कलाकेन्द्र के कलाकार सिमरन, आरोही एवं आर्या ने जन-जन का कल्याण करेगी नारी... गीत पर नृत्य से सबका मन मोह लिया। मंच संचालन ब्र.कु. लता ने किया।

जीवन के सफर में आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क जोन बनाएं



बिलासपुर-छ.ग.।

ब्रह्माकुमारीज ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा शिव-अनुराग भवन में सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस के अवसर पर आयोजित 'सुहना सफर' कार्यक्रम में ट्रांसपोर्ट एंड ट्रेवल विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. कविता मुंबई ने कहा कि लोग भले कहते हैं कि जिंदगी एक सफर है सुहना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना? लेकिन चूँकि भविष्य में परमात्मा द्वारा एक नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्तव्य किया जा रहा है, हम अनुभव करते हैं कि यहाँ कल क्या हो, यह हमने जाना।

मन के विचारों के ट्रैफिक से होती है डबल दुर्घटना... उन्होंने कहा कि जब मन के विचारों का ट्रैफिक बहुत बढ़ जाता है, तब दुर्घटनाएं होती हैं - न केवल सड़कों पर, बल्कि शब्दों के माध्यम से भी, जिससे रिश्तों में दूरियां आती हैं।

नो नेटवर्क जोन की अनिवार्यता - आज की टेक्नोलॉजी पर अत्यधिक निर्भरता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा कि हमें साधनों

- जीवन के सफर को सुहना बनाने के लिए जरूरी है आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क जोन - ब्र.कु. कविता दीदी
- सड़क दुर्घटना पीड़ितों के प्रति दी गई गौन श्रद्धांजलि एवं प्रार्थनाओं को दिया गया शांति दान
- सुरक्षा सेवा में लगे शिक्षाविदों का किया गया सम्मान

का उपयोग करना चाहिए, न कि साधन हमारा उपयोग करें। इसके लिए उन्होंने सभी को प्रतिदिन एक 'नो नेटवर्क जोन' बनाने की सलाह दी। यह समय 10 मिनट से 60 मिनट तक का हो सकता है, जब हम इन साधनों से दूर रहें। रेलवे पुलिस महानिरीक्षक

मुनवर खुशीद साहिब ने कहा कि भारतीय रेल रोज 2 करोड़ 40 लाख लोगों को सफर कराती है। 'सेफ ड्राइविंग, लेन ड्राइविंग इन सेव ड्राइविंग' और हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि घर पर कोई हमारा इंतजार कर रहा है। सम्मान समारोह समाज सेवा में कार्यरत यातायात पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल और मृत्युर्दंड तैनीकों को मोमटे दीकट सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त बिलासपुर के एसई सीएल संस्थान में सीएमडी, एचओडी एवं एम्प्लॉइज के सम्मुख, आरपीएफ बैरक में रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के सहायक सुरक्षा आयुक्त - सुरेश पी.अत्री, सहायक सुरक्षा आयुक्त, अपराध व आसूचना, रकेश कुमार, सहायक सुरक्षा आयुक्त, मुख्यालय, संजय कुमार साहू, पुलिस महानिरीक्षक, रेलवे पुलिस, रायपुर के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, महायोग पीठधारा के आचार्य मनोहर भंडारी गुरुजी, रेल सुरक्षा बल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त दिनेश सिंह तोमर सहित अनेक गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

आध्यात्मिकता ही भरती है अंदर का खालीपन - मेजर जनरल



गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)।

ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें भारतीय सेना एवं सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने भाग लिया। भारतीय सेना में सेवारत मेजर जनरल गोपाल वर्मा ने कहा कि शारीरिक रूप से सक्षम होने के बाद भी व्यक्ति अपने को कमजोर महसूस करता है। जिसका मूल कारण आंतरिक शक्ति की कमी है। बाहर से तो हर कोई अपने को भर रहा है। लेकिन अंदर खालीपन बढ़ रहा है। आध्यात्मिकता हमें भीतर से जागृत करती है। भारतीय रक्षा लेखा सेवा की पूर्व सीजीडीए देविका रघुवंशी ने कहा कि काफी समय से वो राजयोग का अभ्यास कर रही हैं। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि बिना आत्मबल

- भारत सरकार तथा ब्रह्माकुमारीज के सुरक्षा बलों के बीच हुए बेनिफिशियल एमओयू के तहत कार्यक्रम का आयोजन
- सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम
- सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से अधिक अधिकारियों ने लिया भाग

कुमार ने कहा कि आध्यात्मिकता ही वो शक्ति है, जो सकारात्मक सोच पैदा करती है। सुरक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुकला दीदी ने कहा कि किसी भी समस्या की असली शुरुआत हमारे मन से होती है। आध्यात्मिकता हमें आत्मा के मूल गुणों से जोड़ती है। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव सिंह ने संस्थान के सुरक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देकर की। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य सुरक्षा बलों का आंतरिक सशक्तिकरण करना है। जिससे कि वो आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। मुंबई से आई ब्र.कु. दीपा ने सबको राजयोग का अभ्यास कराया। मंच संचालन भारतीय सेना के सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से भी अधिक अधिकारियों ने भाग लिया। जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय थल सेना, नौसेना, वायु सेना, कोस्ट गार्ड, सीआरपीएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आरपीएफ, आईटीबीपी, एसएसबी, एनडीआरएफ, बीआरओ, दिल्ली, हरियाणा, तेलंगाना, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं चंडीगढ़ पुलिस सम्मिलित हुईं। मौके पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर हरबीर सिंह की भी उपस्थिति रही।

See Latest News login
www.omshantimedia.org